संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

हिन्दी

मूल्य : ₹ १०
प्रकाशन दिनांक :
१ जनवरी २०१४
वर्ष : २३ अंक : ७
(निरंतर अंक : २५३)

''मेरे साधकों का संकल्प मेरे तक पहुँच रहा है । सभी अपना आत्मबल बढ़ायें । षड्यंत्रकारी चाहे कितने भी आरोप लगायें, कितनी भी अफवाहें उड़ायें, ये सब आरोप बेबुनियाद हैं और एक दिन धुलकर चले जायेंगे ।'' - पूज्य बापूजी

सनातन संस्कृति रक्षार्थ विशाल संत-सम्मेलन

सूरत

अहमदाबाद

इन सम्मेलनों में हजारों लोगों की उपस्थिति में विभिन्न संतों एवं संगठनों के प्रमुखों ने संस्कृति एवं संतों पर हो रहे अन्याय का विरोध करते हुए निर्दोष पूज्य बापूजी एवं श्री नारायण साँई की रिहाई की माँग की ।

संजीवनी गोली

बच्चों के विकास के लिए विशेष लाभदायी

लाभ : यह गोली व्यक्ति को शक्तिशाली, ओजस्वी, तेजस्वी व मेधावी बनाती है। इसमें सभी रोगों को नष्ट करने की प्रचंड क्षमता है। यह श्रेष्ठ रसायन द्रव्यों से सम्पन्न होने से सप्तधातु व पंचज्ञानेन्द्रियों को दृढ़ बनाकर वृद्धावस्था को दूर रखती है। हृदय, मस्तिष्क व पाचन-संस्थान को विशेष बल प्रदान करती है। इसमें तुलसी-बीज होने से सभी उम्रवालों के लिए यह बहुत लाभदायी है।

सेवन-विधि : छः माह से दो साल उम्र - आधी गोली, दो से आठ साल - एक गोली, आठ-दस साल से ऊपरवाले - दो गोली खाली पेट चूसकर लें।

सावधानी : सेवन के बाद डेढ़-दो घंटे तक दूध न लें।

विशेष : सर्दियों में बच्चों और उनके माता-पिता के लिए 'संजीवनी गोली' वरदान है।

संत च्यवनप्राश

वीर्यवान आँवले, प्रवालपिष्टी, शुद्ध देशी घी और अन्य कुल मिलाकर ५६ द्रव्यों के अलावा हिमालय से लायी गयी वज्रबला डालकर बनाया गया च्यवनप्राश उत्तम आयुर्वेदिक औषधि, पौष्टिक खाद्य तथा एक दिव्य रसायन है।

लाभ : बालक, वृद्ध, स्त्री-संभोग से क्षीण तथा हृदयरोगियों के लिए विशेष लाभकारी। स्मरणशक्ति व बुद्धिवर्धक तथा कांति, वर्ण और प्रसन्नता देनेवाला। खाँसी, श्वास, वातरक्त, वात व पित्तरोग, शुक्रदोष, मूत्ररोग आदि दूर करनेवाला। बुढ़ापा देरी से लानेवाला तथा टी.बी. व हृदयरोगनाशक तथा भूख बढ़ानेवाला है।

सेवन विधि : १ से २ चम्मच दूध या नाश्ते से पूर्व लें।

केसरयुक्त स्पेशल च्यवनप्राश भी उपलब्ध है।

पुष्टि टेबलेट

श्रेष्ठ रसायन औषधियों से युक्त यह टेबलेट शरीर को हृष्ट-पुष्ट और शक्तिशाली बनाती है। खासकर सर्दियों में कृशकाय एवं दुर्बल व्यक्तियों को इसका सेवन लाभदायी है।

सेवन विधि : ४-४ गोली सुबह-शाम पानी, दूध अथवा च्यवनप्राश से लें।

विशेष : इसके सेवन के बाद खुलकर भूख लगने पर पौष्टिक आहार लें। इन दिनों भोजन में घी, दूध, मक्खन, केला, खजूर, सूखा मेवा आदि पौष्टिक पदार्थों का सेवन करें।

(उपरोक्त सामग्रियाँ सभी संत श्री आशारामजी आश्रमों व समितियों के सेवाकेन्द्रों पर उपलब्ध हैं और डाक द्वारा भी प्राप्त की जा सकती हैं।)

स्वास्थ्यवर्धक विशेष प्रयोग

यौवनदाता : १०-१५ ग्राम गाय के घी के साथ २५ ग्राम आँवले का चूर्ण, ५ ग्राम शहद तथा १० ग्राम तिल का तेल मिलाकर प्रातः सेवन करने से दीर्घकाल तक युवावस्था बनी रहती है।

यादशक्ति बढ़ाने हेतु : प्रतिदिन १५ से २० मि.ली. तुलसी रस व एक चम्मच च्यवनप्राश का थोड़ा-सा घोल बना के सारस्वत्य मंत्र अथवा गुरुमंत्र जपकर पियें। ४० दिन में चमत्कारिक फायदा होगा।

वीर्यवर्धक योग : ४-५ खजूर रात को पानी में भिगो के रखें। सुबह १ चम्मच मक्खन, १ इलायची व थोड़ा-सा जायफल पानी में घिसकर उसमें मिला के खाली पेट लें। यह वीर्यवर्धक प्रयोग है।

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलुगू, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी देवनागरी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २३ अंक : ०७
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २५३)
प्रकाशन दिनांक : १ जनवरी २०१४
मूल्य : ₹ १०
पौष-माघ वि.सं. २०७०

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक :
श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा, श्रीनिवास
संरक्षक : श्री जमनालाल हलाटवाला
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद -३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५.

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में
(१) वार्षिक : ₹ ६०/-
(२) द्विवार्षिक : ₹ १००/-
(३) पंचवार्षिक: ₹ २२५/-
(४) आजीवन : ₹ ५००/-

नेपाल, भूटान व पाकिस्तान में (सभी भाषाएँ)
(१) वार्षिक : ₹ ३००/-
(२) द्विवार्षिक : ₹ ६००/-
(३) पंचवार्षिक: ₹ १५००/-

अन्य देशों में
(१) वार्षिक : US $ २०
(२) द्विवार्षिक : US $ ४०
(३) पंचवार्षिक : US $ ८०

ऋषि प्रसाद (अंग्रेजी)

	वार्षिक	द्विवार्षिक	पंचवार्षिक
भारत में	७०	१३५	३२५
अन्य देशों में	US $ 20	US $ 40	US $ 80

सम्पर्क

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.).
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८.
e-mail: ashramindia@ashram.org
web-site: www.rishiprasad.org
www. ashram.org

ॐ ॐ ॐ इस अंक में ॐ ॐ ॐ

(१) विवेक जागृति ४
✼ कसाई से भी घातक कुप्रचारक
(२) महाराष्ट्र के संतों के उद्‌गार ५
(३) राष्ट्र जागृति ६
✼ सर्व धर्म समान ?
(४) सूरत पुलिस के खिलाफ न्यायालय में शिकायत दर्ज ८
(५) न्यायालय ने पुलिस को लगायी कड़ी फटकार ८
(६) श्री नारायण साँईं द्वारा बलात्कार की स्वीकृति की खबरों का पर्दाफाश ! ८
(७) श्री नारायण साँईं ने सारे आरोपों को बताया गलत९
(८) पुलिस रिमांड की माँग खारिज९
(९) यह सारा ड्रामा मीडिया का है - श्री मुरारीलालजी ९
(१०) विकृत न्यूज दिखानेवाले चैनलों पर पॉक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज १०
(११) पर्व मांगल्य १२
✼ सर्वोन्नति का अमोघ साधन : माता-पिता का आशीर्वाद
(१२) विराट धर्म रक्षा संत-सम्मेलन १४
✼ बापू तो संतशिरोमणि हैं
✼ वह दिन दूर नहीं कि बापूजी हमारे बीच होंगे
(१३) सनातन धर्म के सुदृढ़, सबल प्रहरी हैं पूज्य बापू - स्वामी केशवानंदजी २२
(१४) टीवी चैनलों पर नियंत्रण के लिए सरकार बनाये दिशानिर्देश २३
(१५) मेरी क्रांतिकारी योजना - स्वामी विवेकानंदजी २४
(१६) पत्रकारिकता के आदर्श : पं. मदनमोहन मालवीयजी २५
(१७) अत्याचारियों को अत्याचार का फल भुगतना पड़ेगा २७
(१८) पूज्य बापूजी एवं श्री नारायण साँईं की रिहाई के लिए हुआ १०८ त्रिकुंडी महायज्ञ २७
(१९) उपासना अमृत ✼ सर्वफलप्रदायक माघ मास व्रत २८
(२०) भगवन्नाम महिमा ✼ 'हरि' की महिमा अपरम्पार ३०
(२१) संत-सम्मेलन, सूरत ३२
(२२) धर्म रक्षा संत-सम्मेलन, हाथरस ३५
(२३) शरीर स्वास्थ्य ३६
✼ शीतकाल में बलसंवर्धनार्थ : मालिश
✼ खजूर खाओ, सेहत बनाओ !
(२४) बापूजी पर ऐसा इल्जाम लगाना वाहियात है ३८
(२५) वह समाजसेवा जो है दुर्गुणहारी, भाग्य-उद्धारिणी ३९
(२६) गीता जयंती पर आयोजित हुए विभिन्न कार्यक्रम ३९
(२७) षड्यंत्रकारियों के रंग में हो रहा भंग, साधकों की सुप्रचार सेवा ला रही रंग ४०

कसाई से भी घातक कुप्रचारक

महात्मा बुद्ध की भी बहुत निंदा चलती थी, महावीर स्वामी की भी बहुत निंदा चली । ऐसा धरती पर कोई महापुरुष नहीं हुआ जिसकी निंदा न हुई हो, आज तक का इतिहास देखो । कोई हमारा हाथ तोड़ दे, पैर तोड़ दे अथवा कोई हमारा सिर तोड़ दे तो इतना घाटा नहीं होता, जितना घाटा हमारी श्रद्धा तोड़नेवाला अभागा करता है । श्रद्धा तोड़नेवाला बहुत खतरनाक व्यक्ति है । ईश्वरप्राप्ति के रास्ते पर चलते-चलते साधक श्रद्धा टूटने से गिर जाते हैं, फिर चलते हैं फिर गिरते हैं । हमारे जीवन में ऐसा नहीं हुआ तो हमारा काम जल्दी हो गया ।

जो दूसरों की श्रद्धा तोड़ते हैं वे कसाई से भी ज्यादा घातक होते हैं । कसाई तो एक बार ही जान लेता है और वह श्रद्धा तोड़ के तो चौरासी लाख जन्मों तक उसकी जान लेता रहेगा । किसीका हाथ तोड़ना, पैर तोड़ना - ये तो पाप हैं लेकिन श्रद्धा तोड़ना अत्यंत भयंकर पाप है । हमें भी श्रद्धा तोड़नेवाले बहुत मिले, 'इतना सुंदर है, इतना कमाता है, पत्नी रो रही है, भाई बिलख रहा है, माँ बिलख रही है । साँईं तुम्हारे गाँव में आयें तो सत्संग सुन लिया करो, प्रणाम कर लिया करो ।' - ऐसी अक्ल देनेवाले मेरे को कम नहीं मिले । गुरु से चालबाजी करना अपने मुक्तिफल को गिराना है, अपने लिए भविष्य अंधकारमय करना है । कई आये श्रद्धा तोड़नेवाले लोग लेकिन हम डटे रहे । किसीको दो प्रतिशत फायदा हुआ, किसीको दस, किसीको पंद्रह पर सौ प्रतिशत फायदे के लिए तो सौ प्रतिशत श्रद्धा चाहिए । तो अपनी मान्यता के अनुसार एक जन्म नहीं हजार जन्म जियो, आखिर में गिर जाता है आदमी । इसलिए बोलते हैं, 'शास्त्र के अनुसार चलो ।' रामकृष्णदेव ने अपनी मान्यता के अनुसार काली माता को तो प्रकट कर लिया लेकिन काली माता ने कहा कि 'गुरुजी की शरण जाओ ।' नामदेवजी ने अपनी मान्यता के अनुसार विट्ठल को प्रकट कर लिया लेकिन विट्ठल ने कहा : 'विसोबा खेचर के पास जाओ ।' भगवान शिव को पार्वतीजी ने अपनी मान्यता के अनुसार पति के रूप में पा लिया लेकिन शिवजी ने कहा : 'वामदेव गुरु की शरण जाओ ।' यह क्या रहस्य है ! हमें अपना मनमाना करके इतना ज्ञान मिल सकता था क्या ? किताबें पढ़ के इतना ज्ञान ले सकते थे क्या ? जो ज्ञान सत्संग से मिलता है और जितनी ऊँचाई होती है वह हजार जन्म की तपस्या से भी नहीं होती । इसलिए सत्संग तो भगवान से भी बड़ा है । अर्जुन को कृष्ण भगवान मिले फिर भी शोक नहीं मिटा, सत्संग मिला तब शोक मिटा । सेवा और सत्संग... सेवा से सुख लेने की वासना मिटती है और सत्संग से अज्ञान मिटता है ।

महाराष्ट्र के संतों के उद्गार

श्री श्री १००८ महामंडलेश्वर शांतिगिरिजी महाराज : पूज्य बापूजी ने पिछले ५० साल में जो समाजसेवा का कार्य किये हैं, उन्हें मीडिया ने कभी नहीं दिखाया । इसके विपरीत उनको बदनाम करने के लिए रचे हुए षड्यंत्र में शामिल होकर झूठ-मूठ की कहानियाँ बना के आम जनता को भ्रमित करने में मीडिया आगे आ रहा है । लेकिन हमारा न्यायपालिका पर विश्वास है, बापूजी शीघ्र ही निर्दोष रिहा होंगे ।

श्री भास्करगिरिजी, वारकरी सम्प्रदाय, देवगढ़ संस्था : बापूजी निर्दोष हैं । हम बापूजी के साथ हैं । बापूजी के सभी साधकों के लिए मेरा यह संदेश है कि वर्तमान परिस्थिति में भी पूरे हक से और छाती ठोक के कहिये कि 'हम बापूजी के साधक हैं !' और सुप्रचार चालू रखिये ।

भागवताचार्य श्री मुकुंद जाटदेवड़ेकर : समाज को यह चाहिए कि वह दृष्टिहीन न बने । जो आरोप लगा रहे हैं और जिन पर आरोप मढ़े जा रहे हैं उनकी योग्यता क्या है इसको परखना, उसका विवेक करना यह विचारशील समाज का कार्य है । जो आरोप लगाकर समाज की आँखों में धूल झोंक रहे हैं, उन्होंने ही कांची कामकोटि पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वतीजी महाराज पर आरोप मढ़े थे लेकिन उनमें से एक भी सही सिद्ध नहीं हुआ । यहाँ जिन (बापूजी) पर आरोप लगाया जा रहा है, उन्होंने करोड़ों पथिकों को साधना की राह पर लगाया है । अतः देशवासियो सावधान ! दुष्प्रचारकों से गुमराह न हों ।

श्री सद्गुरु एकनाथनंद रामानंद सरस्वतीजी (भोलेबाबा) : संत आशारामजी बापू को षड्यंत्र में फँसाया गया है जैसे जयेन्द्र सरस्वतीजी को फँसाया गया था पर उसके बाद क्या परिणाम आया - यह आपको और हमको पता है । बापूजी के ऊपर जो आरोप लगाये हैं उसका प्रत्यक्ष परिणाम भी आपने

हरि भक्त परायण श्री शिवाजी महाराज देशमुख : जिस पेड़ पर फल होते हैं लोग उसी पर पत्थर मारते हैं । बबूल के पेड़ को कोई पत्थर नहीं मारता । बापूजी फल देनेवाले वृक्ष हैं । उनके करोड़ों साधक हैं । उनकी प्रेरणा से लाखों-करोड़ों लोग व्यसनमुक्त, सुसंस्कारित हुए हैं, यही कुछ राज्यकर्ताओं को पसंद नहीं है ।

सनातन धर्म के प्रति हिन्दुओं की आस्था नष्ट करने के लिए ब्रिटिश शासन द्वारा परतंत्र भारत में मैकाले की जो शिक्षा-प्रणाली शुरू की गयी थी, उसके प्रभाव से आज भी शिक्षित समाज के प्रतिष्ठित लोग अपने सनातन धर्म की महिमा से अनभिज्ञ हैं तथा इसका गौरव भूलकर पाश्चात्य काल्पनिक कल्चर से प्रभावित हो रहे हैं। क्योंकि आज भी भारत के विद्यालयों-महाविद्यालयों में वही झूठा इतिहास पढ़ाया जा रहा है, जो अंग्रेज कूटनीतिज्ञों ने लिखा था।

सनातन धर्म के अतिरिक्त अन्य धर्म अपने धर्म को ही सच्चा मानते हैं और दूसरे धर्मों की निंदा करते हैं। केवल सनातन धर्म ने ही अन्य धर्मों के प्रति उदारता और सहिष्णुता का भाव सिखाया है। इसका मतलब यह नहीं कि सब धर्म समान हैं। यदि समस्त विश्व के सभी धर्मों का अध्ययन करके तटस्थ अभिप्राय बतानेवाले विद्वानों ने किसी एक धर्म को तर्कसंगत और श्रेष्ठ घोषित किया हो तो उसकी महानता सबको स्वीकार करनी पड़ेगी।

सम्पूर्ण विश्व में यदि किसी धर्म को ऐसी व्यापक प्रशस्ति प्राप्त हुई है तो वह है 'सनातन धर्म'। सनातन धर्म की महिमा एवं सच्चाई को भारत के संत और महापुरुष तो सदियों से सैद्धांतिक व प्रायोगिक प्रमाणों के द्वारा प्रकट करते आये हैं। विश्वप्रसिद्ध विद्वानों के निम्नलिखित वचन सनातन धर्म की महत्ता प्रतिपादित करते हैं :

(१) ''मानव-जाति के अस्तित्व के प्रारम्भ के दिनों से लेकर अब तक पृथ्वी पर जहाँ जिंदे मनुष्यों के सब स्वप्न साकार हुए हैं, वह एकमात्र स्थान है - भारत।''

- रोमां रोलां (फ्रेंच विद्वान)

(२) ''मैंने ४० वर्षों तक विश्व के सभी बड़े धर्मों का अध्ययन करके पाया कि हिन्दू धर्म के समान पूर्ण, महान और वैज्ञानिक धर्म कोई नहीं है। भूलिये नहीं ! हिन्दू धर्म के बिना भारत का कोई भविष्य नहीं है। हिन्दू धर्म वह भूमि है जिसमें भारत कि जड़ें गहरी जमी हुई हैं और यदि उस भूमि से उसे उखाड़ा गया तो भारत वैसे ही सूख जायेगा जैसे कोई वृक्ष भूमि से उखाड़ने पर सूख जाता है। यदि आप हिन्दू धर्म छोड़ते हो तो आप अपनी भारत माता के हृदय में छुरा भोंकते हो।''

- डॉ. एनी बेसेंट (ब्रिटिश लेखिका, थियोसॉफिस्ट, समाजसेविका)

(३) ''जीवन को ऊँचा उठानेवाला उपनिषदों के समान दूसरा कोई अध्ययन का विषय सम्पूर्ण विश्व में नहीं है। इनसे मेरे जीवन को शांति मिली है, इन्हींसे मुझे मृत्यु के समय भी शांति मिलेगी।''

- शॉपनहार

(जर्मन दार्शनिक)

(४) ''प्राचीन युग की सभी स्मरणीय वस्तुओं में 'भगवद्गीता' से श्रेष्ठ कोई भी वस्तु नहीं है। गीता के साथ तुलना करने पर जगत का समस्त आधुनिक ज्ञान मुझे तुच्छ लगता है। मैं नित्य प्रातःकाल अपने हृदय और बुद्धि को गीतारूपी पवित्र जल में स्नान कराता हूँ।''

- हेनरी डेविड थोरो

(अमेरिकन लेखक व दार्शनिक)

(५) ''धर्म के क्षेत्र में सब राष्ट्र दरिद्र हैं लेकिन भारत इस क्षेत्र में अरबोंपति है।''

- मार्क ट्वेन

(अमेरिकन विद्वान)
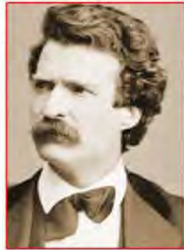
(६) ''जब हम पूर्व कि ओर और उसमें भी शिरोमणि स्वरूप भारत की साहित्यिक एवं दार्शनिक महान कृतियों का अवलोकन करते हैं, तब हमें ऐसे अनेक गम्भीर सत्यों का पता चलता है, जिनकी उन निष्कर्षों से तुलना करने पर जहाँ पहुँचकर यूरोपीय प्रतिभा कभी-कभी रुक गयी है, हमें पूर्व के तत्त्वज्ञान के आगे घुटने टेक देने पड़ते हैं।'' - विक्टर कोसिन

(७) ''हमें गोमांस-भक्षण और शराब पीने की छूट देनेवाला ईसाई धर्म नहीं चाहिए। धर्म-परिवर्तन वह जहर है, जो सत्य और व्यक्ति की जड़ों को खोखला कर देता है। मिशनरियों के प्रभाव से हिन्दू परिवार का विदेशी भाषा, वेशभूषा, रीति-रिवाज के द्वारा विघटन हुआ है। यदि मुझे कानून बनाने का अधिकार होता तो मैं धर्म-परिवर्तन बंद करवा देता। इसे तो मिशनरियों ने एक व्यापार बना लिया है, पर धर्म आत्मा की उन्नति का विषय है। इसे रोटी, कपड़ा या दवाई के बदले में बेचा या बदला नहीं जा सकता।'' - महात्मा गांधी
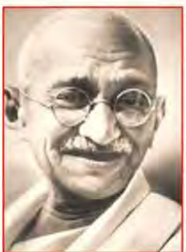
(८) ''हिन्दू समाज में से एक मुस्लिम या ईसाई बने, इसका मतलब यह नहीं कि एक हिन्दू कम हुआ बल्कि हिन्दू समाज का एक दुश्मन और बढ़ा।''

- स्वामी विवेकानंद

(९) ''भारत एक ओर पश्चिम से आयात किये गये धर्म-निरपेक्ष वाद में फँसा है और दूसरी ओर पश्चिम के धर्मों द्वारा परिवर्तन के दबाव में। इन धर्मावलम्बियों के पास काफी बड़ी मात्रा में आर्थिक साधन हैं जिनके बल पर वे धर्मांतरण करने में सफल हो रहे हैं। उनका एकमात्र उद्देश्य देश को खंड-खंड करना है। आज तक भारत इनको रोकने के बजाय तुष्टि करने के रास्ते पर चल रहा है। असत्य से समझौता करना न अहिंसा है और न सहनशीलता, अपितु यह तो आत्महत्या करना है। आवश्यकता है भारत के बुद्धिजीवी, आध्यात्मिक गुरु तथा नेतागण अपनी तन्द्रा त्यागकर उठें और मानवता की रक्षा के लिए और विश्व शांति के लिए कटिबद्ध हों। इसके लिए सभी धर्मों को एक समान बताना और उनकी हर उचित-अनुचित आस्थाओं को सही ठहराना कतई उचित नहीं है।'' - डॉ. डेविड फ्राली

तटस्थ एवं निष्पक्ष विद्वानों व विचारकों द्वारा सनातन धर्म एवं अन्य धर्मों के विषय में प्रकट किये गये इन विचारों के अध्ययन के पश्चात् आशा है कि सनातन धर्मावलम्बी स्वयं को हिन्दू कहलाने में गर्व का अनुभव करेंगे।

सूरत पुलिस के खिलाफ न्यायालय में शिकायत दर्ज

कानून की अवहेलना कर मोटेरा आश्रम में दी गयी दबिश

२९ दिसम्बर, अहमदाबाद । सूरत शहर की पुलिस उपायुक्त तथा ३५ पुलिसकर्मियों के विरुद्ध एक साधक द्वारा गांधीनगर न्यायिक अदालत में आईपीसी की धारा १६६, १६६ए (ए) व (बी) तथा ११४ के तहत शिकायत दर्ज करायी गयी है । इन सभीने २१ नवम्बर को बिना किसी सर्च वॉरंट के आश्रम के विरुद्ध षड्यंत्र रचनेवाले दो विरोधियों को लेकर प्रभातकाल से शाम ७.३० बजे तक पूरे अहमदाबाद आश्रम में खोजबीन की थी । बहुत-से दस्तावेज, हार्ड डिस्क आदि सामान बिना कोई जानकारी दिये पुलिस लेकर गयी थी ।

फरियाद में बताया गया है कि सुबह से सूरत पुलिस ने साधना करनेवाले लगभग १०० साधकों को एक को बाहर निकाल दिया, जिससे भोजन में भी जगह बिठाकर उनकी विडियो रिकॉर्डिंग की । भोजनालय में भोजन बना रहे साधकों अवरोध हुआ ।

(सर्च ऑपरेशन के विस्तृत विवरण हेतु पढ़ें 'ऋषि प्रसाद', दिसम्बर २०१३, पृष्ठ : २७)

न्यायालय ने पुलिस को लगायी कड़ी फटकार

२ जनवरी, सूरत । गुजरात पुलिस द्वारा श्री नारायण साँईं की २३ दिन की पुलिस रिमांड के बाद फिर से ४ दिन की रिमांड बढ़ाने की माँग को न्यायालय ने नामंजूर करते हुए पुलिस को कड़ी फटकार लगायी ।

श्री नारायण साँईं द्वारा बलात्कार की स्वीकृति की खबरों का पर्दाफाश !

जिस प्रकार से बापूजी के सेवक शिवा भाई के बारे में मीडिया में भ्रामक प्रचार किया गया था कि 'शिवा ने स्वीकारा है कि उसके पास एक सेक्स सीडी है ।' यही नहीं जैसे स्वयं बापूजी की धर्मपत्नी लक्ष्मीदेवीजी के बारे में भी बापूजी के विरुद्ध बयान देने की झूठी बात को प्रचारित किया गया था, ठीक वैसे ही यह मिथ्या, मनगढ़ंत दुष्प्रचार किया जा रहा है कि 'नारायण साँईं ने स्वीकार कर लिया है कि लड़की के साथ बलात्कार हुआ है ।' लेकिन जिस प्रकार बाद में शिवा भाई और माताजी के वक्तव्यों से ऐसे दुष्प्रचार की पोल खुल गयी थी, ठीक उसी प्रकार नारायण साँईं के एक चैनल पर आये वक्तव्य से दूध का दूध और पानी का पानी होकर ऐसे सभी आरोप निराधार साबित हुए हैं ।

स्वयं साँईंजी ने पुलिस द्वारा उपरोक्त बयान दिये जाने के बाद मीडिया के सामने कहा कि 'लड़की के साथ रेप नहीं हुआ है ।' तथा साँईंजी के वकील ने भी मीडिया के सामने आकर पुलिस की बात का पूर्णतया खंडन किया ।

श्री नारायण साँईं ने सारे आरोपों को बताया गलत

सूरत पुलिस की पूछताछ के दौरान श्री नारायण साँईं ने उनके ऊपर लगाये गये सारे आरोपों को गलत बताया है । साँईंजी ने कहा कि "न तो वे सब-इंस्पेक्टर कुम्भानी को जानते हैं और न ही उन्होंने किसीको किसीसे मिलकर केस को कमजोर करने के लिए कहा है ।"

पूज्य बापूजी के समर्थन में हिन्दू यूनाइटेड फ्रंट

यह सारा ड्रामा मीडिया का है

- श्री मुरारीलालजी, राष्ट्रीय अध्यक्ष, हिन्दू यूनाइटेड फ्रंट

संत आशारामजी बापू को ईसाइयों द्वारा घेरा जा रहा है, बदनाम किया जा रहा है। किसीको बदनाम करना हो तो उसको दुष्चरित्र साबित कर दो। यही हथकंडा इन्होंने शुरू किया है। इस समय देश में मुद्दा है कि हिन्दू साधु-संतों को प्रताड़ित करो, अपमानित करो, दुष्चरित्र साबित करो। अगर साबित नहीं भी होते तो ५-६ महीने राग अलापते रहो क्योंकि आम जनता टीवी देखती है और इसमें विडियो होता है, ऑडियो होता है, यह सीधे दिमाग में रजिस्ट्रेशन रखता है।

तेजपाल का केस हो गया। वह मीडिया का आदमी है। उस पर मीडिया इतना नहीं चिल्लाया, उसको कभी इन्होंने नहीं कहा कि यह कंस है, यह रावण है, यह पापी है, दुराचारी है, फाँसी के काबिल है लेकिन जितनी भी उपमाएँ शब्दकोश में थीं उन्होंने पूरा उपयोग किया था जब हमारे आशारामजी बापू को गिरफ्तार किया गया, उनकी दलील ही नहीं सुनी जा रही। यह सारा ड्रामा मीडिया का है।

'ऋषि प्रसाद' मैंने पढ़ी है। अद्भुत पत्रिका है, अद्भुत विचार उसमें हैं ! और एक-दो बापूजी के सत्संग भी सुने थे। तकरीबन ५ वर्ष पहले इन्होंने अपने अनुयायियों को स्वयं कहा था कि 'कुछ समय के बाद मेरे ऊपर आरोप लगाये जायेंगे, अत्याचार होंगे।' मैंने खुद सुना हुआ है। ये संत आपको अनेक वर्ष पहले बता देते हैं कि मेरे साथ यह होनेवाला है और बिल्कुल वही हो रहा है।

मीडिया ट्रायल द्वारा पहले शंकराचार्य आदि संतों का दुष्प्रचार किया गया लेकिन आज वे निर्दोष साबित हो गये। वही बात अब संत आशारामजी के साथ दोहरायी जा रही है। 'हिन्दू यूनाइटेड फ्रंट' की तरफ से मैं यह माँग करता हूँ कि मीडिया ट्रायल बंद किया जाना चाहिए।

श्री लवलीन, सदस्य, हिन्दू यूनाइटेड फ्रंट : हमारे महान संत बापू आशारामजी हमारे हिन्दू समाज की एक बहुत बड़ी हस्ती हैं। मैं ईश्वर का धन्यवाद देता हूँ कि हमारे समाज को उसने इतने महान संत दिये जिन्होंने हमारे हिन्दू धर्म के लोगों में एक नवचेतना जगा दी, प्राण फूँक दिये, जिसकी आज हमें जरूरत थी। मैंने न तो बापूजी से दीक्षा ली है, न उनका चेला हूँ लेकिन उन्होंने जो हिन्दू धर्म के लिए काम किये हैं, उसके लिए हम सभी हिन्दुओं का फर्ज बनता है कि हमारे में जितनी भी शक्ति है, जो कुछ भी हम कर सकते हैं बापू आशारामजी के लिए करें।

पश्चिमी पद्धति से जन्मदिवस मनाना स्वास्थ्य के लिए प्रतिकूल

भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद' द्वारा सूचित किये जाने के बाद सरकार द्वारा अब रोगाणुओं को फैलने से बचाने के लिए जन्मदिवस एवं विभिन्न उत्सवों के दौरान केक पर जलायी जानेवाली मोमबत्तियों को फूँककर बुझाने पर रोक लगाने के बारे में विचार-विमर्श किया जा रहा है।

पूज्य बापूजी अपने सत्संगों में पिछले कई वर्षों से इससे होनेवाली हानियों के बारे में बताते रहे हैं। आज वही बात सभीको स्वीकार करनी पड़ रही है। ऑस्ट्रेलिया की 'राष्ट्रीय चिकित्सा एवं अनुसंधान परिषद' ने भी कुछ समय पहले इस प्रकार रोक लगाने के कदम उठाये थे।

विकृत न्यूज दिखानेवाले चैनलों पर पॉक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज

'न्यूज २४', 'इंडिया न्यूज' और 'न्यूज नेशन' चैनलों के खिलाफ 'यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण अधिनियम २०१२' (POCSO), भारतीय दंड विधान (IPC) एवं सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम (खढ अउढ) की विभिन्न धाराओं के तहत १६ दिसम्बर का गुड़गाँव,हरियाणा में जीरो एफआईआर दर्ज हुई है । पुलिस ने जीरो एफआईआर दर्ज करके मामला नोयडा (उ.प्र.) के थाने के पास भेज दिया है । फरियादी के अनुसार इन चैनलों ने १२ दिसम्बर को उनकी नाबालिग भतीजी और पत्नी का संत आशारामजी बापू के साथ का जो वास्तविक विडियो था, उसके साथ छेड़छाड़ करके अश्लील तरीके से प्रस्तुत किया।

याचिकाकर्ता ने बताया कि 'हमारे सद्‌गुरु संत श्री आशारामजी बापू हमारी प्रार्थना पर हमारे घर आये थे । उस समय हमारे परिवार तथा आस-पड़ोस के कई लोग उपस्थित थे और सभीने मिलकर बापूजी का पूजन तथा सत्कार किया था। इसके बाद बापूजी ने वहाँ उपस्थित सभीके साथ मेरी भतीजी को भी आशीर्वाद दिया था । इस अभूतपूर्व प्रसंग को सँभाल के रखने के लिए हमने मोबाइल फोन से विडियोग्राफी करवायी थी, जो हमने पुलिस को दी है।

दिनांक १२ दिसम्बर २०१३ को मैंने देखा कि 'न्यूज २४' चैनल पर दोपहर ३.०५ बजे, 'इंडिया न्यूज' चैनल पर शाम ५.३० बजे तथा 'न्यूज नेशन' चैनल पर रात्रि ८.४५ बजे उस विडियो क्लिप के साथ छेड़छाड़ करके उसे तोड़-मरोड़कर विकृत रूप से प्रसारित किया जा रहा था । चैनलों पर पूरी विडियो क्लिप को अश्लीलता से जोड़कर दिखाया गया। मेरी पत्नी को शिल्पी के नाम से दिखाया गया है । उल्लेखनीय है कि शिल्पी को पुलिस और मीडिया द्वारा तथाकथित सेक्स रैकेट के मुख्य सूत्रधार के रूप में दुष्प्रचारित किया गया है।

फरियादी ने कहा कि 'इस टीवी कार्यक्रम के प्रसारण से मैं और मेरा पूरा परिवार स्तब्ध रह गया व हमें बड़ी मानसिक पीड़ा हुई तथा गहरा आघात लगा । पड़ोसियों एवं परिचितों ने हम पर ताने कसना शुरू कर दिया, जिससे मेरा पूरा परिवार आहत है। हमारी धार्मिक भावनाओं को गहरी ठेस पहुँची है। स्कूल में भी बच्चों ने मेरी भतीजी पर ताने कसे, जिससे वह मानसिक तनाव से ग्रस्त है। इसके लिए मैंने कानून और पुलिस व्यवस्था का आश्रय लेकर उपरोक्त सभी तथा जाँच में पाये जानेवाले अन्य सभी दोषियों के खिलाफ सख्त से सख्त कानूनी कार्यवाही करने तथा हमें सुरक्षा प्रदान करने की प्रार्थना की है।

मानसिक प्रताड़ना से ग्रस्त फरियादी ने कहा कि 'इन चैनलों ने मानवता से हटकर अपनी टीआरपी बढ़ाने के लालच में जो दिखाया उससे मेरी भतीजी असामान्य हो गयी है। मेरे पूरे परिवार का समाज म जीना मुश्किल हो गया है । यदि इन चैनलों के खिलाफ कोई कानूनी कार्यवाही करके सच्चाई समाज के सामने नहीं लायी गयी तो इस नन्ही बच्ची

सहित हमारा पूरा परिवार समाज में ससम्मान नहीं जी पायेगा, जिसके लिए दोषी ये बदनीयत चैनल और प्रशासन ही होंगे।

क्या इस नन्ही बच्ची को मिलेगा न्याय ?

१६ दिसम्बर २०१३ को गुड़गाँव में जीरो एफआईआर दर्ज हुई, उसके बाद एफआईआर नोयडा पुलिस थाने भेज दी गयी। तब से लेकर आज तक २५ से अधिक दिन हो गये पर आरोपियों के खिलाफ कोई भी कार्यवाही नहीं हुई है। पहले तो जीरो एफआईआर ही नहीं लिखी जा रही थी। ४ दिनों तक लोगों ने इतनी कड़क ठंड में आंदोलन किया, उसके बाद जीरो एफआईआर लिखी गयी।

४ महीने पहले इसी दिल्ली में विश्व के एक परम सम्माननीय संत पूज्य संत श्री आशारामजी बापू के विरुद्ध बोगस आरोप लगानेवालों की एफआईआर तो तुरंत दर्ज की गयी थी, उस समय तो कोई जाँच भी नहीं हुई। कहते हैं कानून सबके लिए समान है, फिर इस नन्ही बच्ची को न्याय क्यों नहीं मिल रहा है ? देश के विभिन्न सामाजिक व महिला संगठन इस नन्ही बच्ची के समर्थन में आगे आये हैं। पूरे देश में इन न्यूज चैनलों के विरुद्ध कार्यवाही की माँग तेज हो गयी है। दिल्ली के 'सार्थक महिला संगठन' ने, लुधियाना में 'धर्म सेवा संघ' के सदस्यों ने, लखनऊ में 'जागो री जागो महिला संगठन' एवं कई अन्य संगठनों ने इन चैनलों के खिलाफ प्रदर्शन कर सरकार से आरोपियों को गिरफ्तार करने की माँग की है।

नोयडा स्थित एसएसपी ऑफिस के समक्ष पिछले पन्द्रह दिनों से सामाजिक महिला संगठनों की हजारों महिला कार्यकर्ता नारी अधिकार के लिए पुरजोर तरीके से न्याय की गुहार लगा रही हैं लेकिन पुलिस प्रशासन द्वारा उनकी आवाज को दबाने की कोशिश की जा रही है। राष्ट्रीय महिला आयोग व राष्ट्रीय बाल अधिकार सुरक्षा आयोग जैसे सशक्त विभागों द्वारा कार्यवाही के निर्देशों के बावजूद भी धन, बल और राजनैतिक प्रभाव से बड़े इन अपराधी चैनलों के खिलाफ पुलिस प्रशासन अब भी निष्क्रिय बना हुआ है और उन्हें बचाने का कुप्रयास कर रहा है। हाल ही में ३ जनवरी को भी नोयडा एसएसपी ऑफिस के सामने हजारों दिल्लीवासियों ने भी इस संदर्भ में धरना-प्रदर्शन किया। इसके अलावा मेरठ (उ.प्र.), ग्वालियर (म.प्र.), बिलासपुर (छ.ग.) आदि स्थानों पर भी विभिन्न महिला संगठनों ने विरोध प्रदर्शन किये।

श्री कृष्णागिरिजी महाराज : धर्म के क्षेत्र में राजकारणियों और देशद्रोहियों का हद से ज्यादा हस्तक्षेप हो रहा है। इसमें बापूजी को फँसाया जा रहा है। उनके ऊपर लगाये हुए आरोप एकदम झूठे हैं। हम बापूजी का पूर्ण समर्थन करते हैं।

भागवताचार्य श्री विजयानंदजी महाराज : आज हिन्दू धर्म के संतों के ऊपर जो आक्रमण हो रहा है, उसका जिम्मेदार समाज है। षड्यंत्र के खिलाफ आवाज उठाना जरूरी है और यह कार्य करने में जनता को तत्पर होना चाहिए।

पुलिस रिमांड की माँग खारिज

अहमदाबाद पुलिस द्वारा पूज्य बापूजी की धर्मपत्नी पूजनीया श्री लक्ष्मीदेवीजी तथा सुपुत्री भारतीदेवीजी, आश्रम की संचालिका ध्रुव बहन व अन्य दो बहनों की माँगी गयी रिमांड गांधीनगर सत्र न्यायालय ने खारिज की। वरिष्ठ अधिवक्ता बी. एम. गुप्ता ने कहा कि "वेरिफिकेशन के लिए जो रिमांड के कारण दर्शाये गये हैं, वे तमाम कारण गैर-कानूनी हैं और ऐसे कारणों में रिमांड नहीं दी जाती।"

इसके पहले न्यायालय द्वारा इन सभीकी जमानत मंजूर की गयी थी और इनके द्वारा पुलिस को पूछताछ में पूरा सहयोग भी किया जा रहा है।

सर्वोन्नति का अमोघ साधन माता-पिता का आशीर्वाद

- पूज्य बापूजी

(मातृ-पितृ पूजन दिवस : १४ फरवरी)

माँ-बाप की शुभकामना बड़ा काम करती है। माता का आशीर्वाद जिन्होंने भी लिया, उन्होंने बड़े ऊँचे-ऊँचे पद को पाया; और ऐसे कई व्यक्तियों को मैं जानता हूँ। मैंने सुनी है संतों से एक कथा। एक बड़ा अमीर लड़का था। पिता मर गये और खूब धन था। लोफरों के संग में इतना लोफर हुआ कि वेश्याओं के पास जाता। एक बार वह एक नामी वेश्या के पास गया। कभी-कभी बुरे आदमियों में भी अच्छाई छुपी होती है। वह वेश्या भी कोई खानदानी लड़की थी, किसी गलती से वेश्या हो गयी थी। उसने पहचाना कि 'यह तो नगरसेठ का बेटा है और इसका पिता मर गया है। मेरे पास यह तबाह हो जायेगा।'

उसने बोला : ''नहीं।''

लड़का बोला : ''तू जितने पैसे माँगेगी मैं दूँगा, मुझे तेरे साथ प्रेम करने दे।''

''नहीं, पहले जो मैं माँगूँ वह दे।''

वह नशे-नशे में बोला : ''हाँ, जो माँगेगी मैं ला देता हूँ।''

''तेरी माँ का कलेजा ले आ। फिर तू मेरे साथ जो भी कर।''

माँ जब सोई थी तब उस शराबी ने मारा छुरा, माँ का कलेजा निकाला। नशे-नशे में उतर रहा था तो सीढ़ी से गिरा, माँ के कलेजे से आवाज आयी, 'बेटा! तुझे चोट तो नहीं लगी।' ओह माँ! तू कैसी है! अपनी पीड़ा भूल गयी और बच्चे की पीड़ा से माँ का हृदय पीड़ित हो रहा है।

मेरी माँ जब ज्यादा उम्र की हो गयी थी, ८०-८५ साल की हो गयी होगी, तब मैंने उनको कहा : ''माँ, तुम्हारे हाथ की रोटियाँ बना दो, तुम्हारे को परिश्रम तो पड़ेगा लेकिन तुम्हारे हाथ की एक बार रोटी खिला दो मेरे को।'' मुझे पता था कि मेरी माँ की उम्र हो गयी है, उसके लिए परिश्रम है रोटी बनाना लेकिन फिर भी माँ के हाथ की रोटी का मुझे पहले इतना स्वाद लगा हुआ था कि मेरे लिए तो हजारों लोग रोटी लानेवाले हैं फिर भी मैंने माँ को कहा : ''माँ! आप मेरे लिए रोटी बना दो।'' और मैं आपको पक्का विश्वासपूर्वक कहता हूँ, मुझे याद है कि माँ ने रोटी बनायी और मैंने खायी; और ऐसा नहीं कि बचपन की बात है, आशाराम बापू बनने के बाद की बात है।

माँ के मन में जो भाव होता है वह बच्चा जाने - न जाने लेकिन बच्चे का मंगल होता है। उसमें

भगवदीय भाव, वात्सल्य होता है। 'मातृदेवो भव। पितृदेवो भव।' माता-पिता, गुरुदेव भले कभी डाँटते हुए दिखें, नाराज होते हुए दिखें फिर भी हमारा मंगल ही चाहते हैं।

माता-पिता तो वैसे ही बच्चों पर मेहरबान होते हैं लेकिन बच्चे-बच्चियाँ जब अपने माँ-बाप में भगवद्बुद्धि करके उनका पूजन करेंगे तो माता-पिता के हृदय में भगवान तो हैं ही हैं... अत: २ मैं तो चाहता हूँ कि माता-पिता के हृदय में सुषुप्त भगवान जाग्रत होकर उन पर छलकें तो माता-पिताओं का भी भला और बच्चे-बच्चियों का भी परम भला होगा।

और तुम्हारी संतानें कितनी भी बुरी हों लेकिन १४ फरवरी को उन बेटे-बेटियों ने अगर तुम्हारा पूजन कर लिया तो तुम आज तक की उनकी गलतियाँ माफ करने में देर नहीं कर सकते हो और तुम्हारा दिलबर देवता उन पर प्रसन्न होने में और आशीर्वाद बरसाने में देर नहीं करेगा, मैं निष्ठापूर्वक कहता हूँ।

त्रिलोचन बनाये मातृ-पितृ पूजन

ईसाई बोलेंगे, 'मातृ-पितृ पूजन दिवस हमारे ईसाईयत के खिलाफ है।' नहीं-नहीं, ईसाईयत के खिलाफ नहीं है। माता-पिता का पूजन गणेशजी ने किया था और शिव-पार्वती का परमेश्वर-तत्त्व छलका था और शरीर विज्ञानी जिसे 'पीनियल ग्रंथि' बोलते हैं, हम उसे 'शिवनेत्र' बोलते हैं। शिव-पार्वती ने गणेशजी के ललाट पर स्पर्श कर दिया था और तीसरा ज्ञान का नेत्र खुल गया। ऐसे ही मेरे भारत के और विश्व के सभी लोग भले ईसाई भाई हों, मुसलमान भाई-बहनें हों अपने बच्चे-बच्चियों के ललाट पर (जहाँ तिलक लगाते हैं) स्पर्श कर दिया करो। माँ-बाप का स्पर्श तीसरा नेत्र खोलने में सहायक होता है। भले उस समय नहीं खुले तो कभी-न-कभी खुलेगा, बच्चे-बच्चियों की सूझबूझ बढ़ेगी, शातिर कर्म से बचेंगे, कुकर्म से बचेंगे। यह तीसरे नेत्र में बड़ी शक्ति है। इससे बच्चे-बच्चियों को आध्यात्मिक आभा जागृत करनेवाले केन्द्र को विकसित करने का अवसर मिलेगा।

गणेशजी के शिवनेत्र पर शिवजी का स्पर्श हो गया था तो सिर्फ शिवजी ही 'शिवजी' नहीं हैं, तुम्हारे अंदर भी शिव आत्मसत्ता है। तुम्हारा भी स्पर्श अपने बच्चे के लिए शिवजी का ही वरदान समझ लेना। तुम्हारे बच्चे और बच्चियों के ललाट पर तिलक करनेवाली उँगली लगाकर 'त्रिलोचनो भव। अप्प दीपो भव। अपना दीया, अपना प्रकाशक आप बन। यह बाहर की आँखों से जगत देखते हो बेटी-बेटा! तुम्हारी ज्ञान की आँख जगे गुरुकृपा से, भगवत्कृपा से, माता-पिता की आत्मकृपा से।' - ऐसा आशीर्वाद देना तो इससे बच्चों का भला होगा, होगा, होगा ही! और बच्चों के माँ-बाप के हृदय के भगवान भी प्रसन्न होंगे। शिशु पैदा हुआ हो तो उस समय भी मन में 'ॐ... ॐ परमात्मने नमः।' जपते हुए माताओं का बच्चे के भ्रूमध्य पर स्पर्श कर देना बड़ा हितकारी है।

१४ फरवरी को बच्चे-बच्चियों के ललाट पर भ्रूमध्य में माता-पिता का भावभीना स्पर्श और माता-पिता के चरणों में बच्चे-बच्चियों का आदरसहित सद्भाव समर्पित हो। माता-पिता के हृदय की दुआ बड़ा महत्त्व रखती है।

विराट धर्म रक्षा संत-सम्मेलन

हमारी भारतीय संस्कृति को नष्ट करने के लिए एक सुनियोजित षड्यंत्र के तहत हिन्दू संतों व हिन्दू मानबिंदुओं पर विदेशी शक्तियों द्वारा कुठाराघात किया जा रहा है। इसमें हमारे ही देश के कुछ स्वार्थी लोगों को मोहरा बनाकर झूठे, अनर्गल आरोप लगवाये जा रहे हैं। 'पेड न्यूज' बना-बनाकर उन आरोपों को तूल दे के जनता को गुमराह करने की साजिश रची गयी है। इसे देख-सुनकर देश की जनता व संत-समाज आहत है। अतः इन विदेशी शक्तियों को बेनकाब करने के लिए तथा संतों के मान-सम्मान व देश की सांस्कृतिक धरोहरों की रक्षा के उद्देश्य से 'धर्म रक्षा मंच' के तत्त्वावधान में अहमदाबाद में १५ दिसम्बर को 'विराट धर्म रक्षा संत-सम्मेलन' का आयोजन किया गया। इसमें हजारों लोगों की उपस्थिति में विभिन्न संतों, धर्माचार्यों तथा धार्मिक व सामाजिक संगठनों के प्रमुखों ने संस्कृति एवं संतों पर हो रहे अत्याचार का विरोध करते हुए संत श्री आशारामजी बापू एवं श्री नारायण साँईं की रिहाई की माँग की। संत-समाज ने गौ, गीता, गंगा तथा हमारे धर्मगुरुओं के सम्मान की रक्षा हेतु समस्त हिन्दू समाज को एकजुट होने की बात कही।

जगद्गुरु श्री पंचानंद गिरिजी, जूना अखाड़ा : यह एक साजिश चल रही है। शंकराचार्यजी की गिरफ्तारी हो या आशारामजी बापू की, नारायण साँईं की या और संतों की, यह एक षड्यंत्र है। आशारामजी बापू को ४ महीने से जेल में रखा है। मैं आह्वान करता हूँ कि सभी अखाड़े, सभी संत-महंत और जो संस्थाएँ हिन्दुओं के लिए कार्य कर रही हैं - वे सभी एकजुट होकर एक ऐसा आंदोलन छेड़ें जो पूरे देश को हिला के रख दे और हमें अपने संतों को जेल लेने न जाना पड़े, सरकार उन्हें यहाँ हमें देने आये।

श्री लक्ष्मीनारायण (दायमा), केन्द्रीय मार्गदर्शक, वि.हि.प. : पूरा हिन्दुस्तान हम उसीको देंगे जो हमारी ऋषि संस्कृति को स्वीकार करेगा और ऋषि संस्कृति को लाना है तो बापूजी को सम्मान देना ही पड़ेगा, हिन्दू संस्कृति का सम्मान करना ही पड़ेगा।

नन्द कुमारजी जाधव, राष्ट्रीय प्रचारक, सनातन संस्था : आज आशारामजी बापू जैसे श्रेष्ठ संत की महानता को ध्यान में न रखकर धर्मद्रोही षड्यंत्रकारियों ने झूठे आरोप लगा के उन्हें जेल में भिजवा दिया है। प्रत्येक युग में संतों पर ऐसे आरोप लगे हैं। संत ज्ञानेश्वरजी महाराज, संत तुकारामजी, समर्थ रामदासजी को भी यह सब सहना पड़ा था। संतों की अपकीर्ति की अनिष्ट शृंखला में परम पूज्य आशारामजी बापू भी नहीं छूटे। इसके पूर्व उन पर वशीकरण, बालकों की हत्या, मंत्र-तंत्र - ऐसे भी आरोप हुए किंतु न्यायालय में उनकी निर्दोषता साबित हुई। और अब असफल हुए धर्मद्रोहियों ने यौन-शोषण के आरोप लगाये हैं।

ईश्वर सर्वोपरि न्यायाधीश है और उनके न्याय पर हमारी श्रद्धा है। इस प्रकरण में भी परम पूज्य बापूजी निर्दोष साबित होंगे यह सुनिश्चित है। संतों की मानहानि करने के पीछे अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्र है। इसके पीछे विदेशी कम्पनियाँ, ईसाई मिशनरियाँ, राजनैतिक ताकतें एवं असामाजिक तत्त्व कार्य कर रहे हैं। धार्मिक षड्यंत्र में ईसाई मिशनरियों का हाथ है, आर्थिक षड्यंत्र में विदेशी कम्पनियाँ हैं और राजनैतिक षड्यंत्र में विधर्मी राज्यकर्ता कार्यरत हैं। अतः हमें एकजुट होकर संतों पर लग रहे झूठे आरोपों का विरोध करना चाहिए।

नीलम दुबे, आश्रम की मीडिया प्रवक्ता : मैं बापूजी से मिलने जेल में गयी थी। मैंने कहा : ''बापूजी सभी साधकों को पीड़ा है कि बापूजी जेल में हैं। सभी आपको व्यासपीठ पर सत्संग करते हुए देखना चाहते हैं।'' बापूजी ने बड़े प्रेम से कहा : ''मेरे साधकों का संकल्प मेरे तक पहुँच रहा है। उन्हें कहो कि अपना आत्मबल बढ़ायें और चिंता न करें, सत्य एक दिन प्रमाणित होगा।''

मैंने पूछा : ''बापूजी ! यह सब क्यों हो रहा है ?'' ''बेटा ! पेड़ काटने के लिए जो बल आता है कुल्हाड़ी में, वह लकड़ी से ही आता है, पेड़ की लकड़ी होती है और पेड़ को ही काटती है। ऐसे ही भारतीय संस्कृति को मिटाने के लिए भारतीयों की ही मदद ली जा रही है लेकिन आगे ऐसा होगा तो नहीं। यह लम्बे अरसे से ऐसा होता आ रहा है कि वे भारतीय संस्कृति को मिटाने के लिए नये-नये तरीके ढूँढ़ते चले जा रहे हैं लेकिन फिर भी भारतीय संस्कृति उतनी ही निखरती चली जा रही है।''

डॉ. सुमन (भूतपूर्व पादरी रॉबर्ट सॉलोमन, इंडोनेशिया), धर्मजागरण समिति के प्रमुख : पूज्य बापूजी के मार्गदर्शन से करोड़ों लोग प्रेरित हो के संस्कारयुक्त समाज का निर्माण करने में सदैव भागीदार रहे हैं और आज हमारे बापूजी को ही कठघरे में खड़ा करके ये क्या साबित करना चाहते हैं ?

आज समाज के ऊपर प्रहार हो रहा है। पूज्य बापूजी के प्रयासों से विश्व के सभी धर्मों के साधु-संत एक मंच पर सदैव आते रहे हैं, संत-शक्ति को जगाने का कार्य बापूजी सदैव करते रहे हैं तो आज हम सबको भी ऊँच-नीच का भेदभाव समाप्त करके एक मंच पर आना है।

श्री रमेश शिंदे, राष्ट्रीय प्रवक्ता, हिन्दू जनजागृति समिति : आज यह परिस्थिति है कि गोमाता के चारा घोटाले में जो दोषी सिद्ध हो गये उनको भी बेल (जमानत) मिल गयी लेकिन पूज्य आशारामजी बापू को जेल में रखा गया है।

हमने आधारहीन खबरें और बनावटी कहानियाँ दिखानेवाले चैनलों के विरोध में सर्वोच्च न्यायालय में जनहित याचिका दायर की है और उसे वहाँ के न्यायाधीश ने स्वीकार किया है। हमने कहा है कि मीडिया न्यायालय नहीं है। एक न्यूज पेपर निकलता है तो उस पर प्रेस काउंसिल एक्ट लगता है, एक फिल्म निकालनी है तो उसके लिए सेंसर एक्ट लगता है, लेकिन चैनल पर कुछ भी दिखाया जाता है तो इनके लिए क्या कोई एक्ट नहीं है ? ऐसा एक कानून बनाना चाहिए कि यदि कोई हिन्दुस्तान के किसी साधु-संत का अपमान करे या स्वाभिमान पर आघात करे तो उसे सजा मिलनी चाहिए। यदि हमारे साधु-संतों के विरोध में गलत प्रचार किया गया और वह प्रचार गलत है यह सिद्ध हुआ तो उस चैनल के मालिक को जेल के अंदर डाल दिया जाना चाहिए, यह हमारी माँग है।

महामंडलेश्वर स्वामी श्री स्वात्मबोधानंदजी महाराज : जिनके प्रति आस्था और विश्वास आज भी जनता और देश में है, वे हैं प्रातःस्मरणीय, परम पूज्य, परम श्रद्धेय, अर्चनीय, वंदनीय, श्रोत्रिय, ब्रह्मनिष्ठ, सद्धर्मसम्राट, नित्यावतार, युगावतार, धर्मावतार, संतशिरोमणि पूज्य आशारामजी बापू।

विश्व की समस्त समस्याओं का समाधान केवल और केवल हिन्दुत्व की स्थापना में है। हीनत्व दूषकः इति हिन्दू। 'हिन्दू' - हीन + दूर। जो हमारे जीवन, समाज, परिवेश में से हीनता, दुराचार, भ्रष्टाचार, पापाचार को दूर करे उसी समाज, उसी जाति और उसी व्यक्ति का नाम होता है हिन्दू और इसी स्थान का नाम भी है हिन्दुस्तान ! और ऐसे ही संस्कारों का पालन-पोषण करनेवाले संत हैं पूज्य बापूजी। बापूजी ने धर्मांतरण को रोक के समाज के भोले-भाले लोगों को, जो हिन्दुत्व की शिक्षा में पिछड़ चुके थे, बहुत आगे ला दिया था और उसका यह परिणाम हुआ कि विदेशी सभ्यतावालों ने कुचक्र किया। संत-समाज और देश की जागरूक जनता भी इस षड्यंत्र को समझ चुकी है और अपनी आवाज बुलंद कर रही है। इसलिए हम शीघ्र ही सफल हो जायेंगे।

श्री उद्धवजी महाराज, वारकरी सम्प्रदाय, महाराष्ट्र : पूज्य बापूजी इस जमाने के श्री वसिष्ठजी हैं। इतना बड़ा घोर अन्याय, इतना बड़ा षड्यंत्र और कहीं, किसी देश में नहीं हुआ होगा जो आज हमारे भारत में हो रहा है। यह कब तक चलता रहेगा ?

अक्षर किसी न्यायाधीश या मंत्री के ऊपर कुछ आरोप लगता है तो पहले एक आयोग गठित किया जाता है। आरोप की जाँच-पड़ताल होती है, उसके बाद ही मुकदमा दर्ज होता है। यद्यपि हमारे में कोई भिन्नता होगी लेकिन राष्ट्र के लिए, धर्म के लिए, हमारी भारत माँ की रक्षा के लिए हम सब एक हैं।

श्री महंत आदित्यनाथजी, राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतीय हिन्दू क्रांति दल : सभी संकल्प लें कि हमें हमारे पूज्य संतों पर लगे हुए जो ये लांछन हैं, इनको मिटा के अपने संतों को वापस लेकर आना है। बहुत जल्द हमारे बीच में आशारामजी बापू इसी मंच पर होंगे और वे पुनः धर्मरक्षा की बात करेंगे और आपके संकल्प से यह होगा।

हमारे महापुरुष पूर्वकाल से सहते आये हैं। उन्होंने समाज के हित के लिए, हमारे स्वाभिमान के लिए बहुत कुछ किया है। जिन्हें हम भगवान कहते हैं उनका तो जन्म ही जेल में हुआ था। यह कोई बुरी बात नहीं है परंतु इस कुचक्र को खत्म करने के लिए हमें संकल्प लेना पड़ेगा।

महामंडलेश्वर श्री रामस्वरूपजी महाराज, उपाध्यक्ष, हिन्दू महासभा : आशारामजी बापू ने एक बहुत बड़ा अपराध किया कि हिन्दुओं को ईसाई बनने से बचा लिया इसलिए उनको यह सजा मिली है। इस देश की जिसने रक्षा की, उसको षड्यंत्रों में फँसाया गया है। लेकिन संत पर जिस किसीने कभी हाथ डाला तो वह हाथ नहीं बचा और जिसने सिर झुकाया उसकी आयु लम्बी हुई।

महामंडलेश्वर श्री जालेश्वरजी महाराज, भागवत कथाकार, रायपुर (छ.ग.) : आज देश में बहुत सारे नेता जिन्हें जेल में होना चाहिए, वे संसद व विधानसभा में बैठे हुए हैं और जिनको सम्मान मिलना चाहिए, ऐसे बहुत सारे संतों को आज जेल में डाल दिया गया है। यह कैसा न्याय है ?

भारतीय संविधान के मूल पन्ने पर प्रारम्भ में लिखा है - सत्यमेव जयते। सत्य की जीत होती है। सत्य परेशान हो सकता है लेकिन कभी पराजित नहीं हो सकता। यह भारतवर्ष भगवान राम की भूमि है, संतों-महापुरुषों की भूमि है और यहाँ धर्म के खिलाफ षड्यंत्र करके संतों को सताने का प्रयास हो रहा है। लेकिन

जो सनातन मिट न सका रावण के अत्याचारों से,
जो सनातन मिट न सका कंस की ललकारों से,
वो सनातन क्या मिटेगा इन षड्यंत्रकारियों से !

श्री नीरज जैन, अधिवक्ता, बजरंग दल के पूर्व संयोजक, विश्व हिन्दू परिषद के पूर्व संगठन मंत्री : भारत में जो भी सोशल मीडिया हैं, 'फेसबुक' या 'वॉट्स अप' आदि जो चलते हैं, उनका भरपूर उपयोग किया जाय। उनके आधार पर हमारी बात समूचे विश्व के सामने रखें और कहें : 'मीडियावालो ! यह प्रिट्रायल कनविक्शन (जाँच से पूर्व दोषसिद्धि) बंद करो। आपका खेल खत्म हो चुका है, हम भारत के नागरिक जाग उठे हैं। हम भारत के संतों का अपमान नहीं सहेंगे...।'

बापू तो संतशिरोमणि हैं

- स्वामी चक्रपाणिजी महाराज, राष्ट्रीय अध्यक्ष, संत महासभा

संत के ३ चरण होते हैं। एक साधक होता है। साधक साधना करता है। बापू ने वर्षों तक साधना की। एक दिन में संत नहीं बने। एक दिन में करोड़ों लोग नहीं जुड़ गये। पहले साधक होता है फिर सिद्ध होता है। सिद्ध, जो बोल दे वह हो जाय। हेलिकॉप्टर गिरकर चूर-चूर हो गया और बापू बिल्कुल सुरक्षित बच गये यह सिद्धता का जीता-जागता उदाहरण है। और तीसरा आता है संत। संत की क्या पहचान है ? कि वे हर परिस्थिति में सम रहे। आप कितनी गालियाँ देते रहो पर वे कहेंगे कि 'तुम्हारा भी कल्याण होगा।' बापूजी को जब हवाई जहाज में ले जा रहे थे तो टीवीवाले दिखा रहे थे कि 'देखो, इनका चेहरा गम्भीर हो गया, ये उदास हो गये हैं।' वास्तव में बापू उदास नहीं हुए थे, वे तो देख रहे थे कि 'बस, अब तो विभाजन हो ही जायेगा, समाज को पता चल जायेगा कि असुर पक्ष कौन है और सुर पक्ष कौन है। पांडव कौन है, कौरव कौन है।' यह निश्चित रूप से समता का भाव था। यही संतत्व की सबसे बड़ी पहचान है।

हम बापूजी से जब जेल में मिलने गये, हमने कहा कि ''आप कब तक आओगे क्योंकि काफी लोगों ने भोजन छोड़ दिया है।'' तो एक मिनट ऊपर देखकर बोले : ''अच्छा ! तो ऐसा करता हूँ कि अन्न-जल कल से मैं भी छोड़ देता हूँ।'' मैंने कहा : ''नहीं-नहीं, यह तो अनर्थ हो जायेगा।'' जो अपने भक्तों के अन्न-जल छोड़ने की बात सुनकर स्वयं अन्न-जल छोड़ने को तैयार हो जायें, वे कभी अपने भक्तों को दुःखी देख सकते हैं ? वे अपने भक्तों के साथ इस तरह की हरकत कर सकते हैं ? कदापि नहीं !

चाहे भुज (गुज.) में भूकम्प आता है या उत्तराखंड में त्रासदी, बापूजी के सेवक तुरंत सेवा में लग जाते हैं। जहाँ दीपावली और होली लोग अपने घरों तक सीमित होकर मनाते हैं, वहीं बापूजी दीपावली को आदिवासी क्षेत्रों में जाकर गरीबों के घरों में दीप जलाते हैं, दिवाली उनके साथ मनाते हैं। और धर्म व संस्कृति पर जब प्रहार होता है तो बापूजी मुँहतोड़ जवाब देने के लिए अपने भक्तों का आह्वान करते हैं। बताओ, यह कितनी बड़ी महानता है ! आज ऐसे संतों का स्थान क्या जेल में है !

जब चमन को सींचना था,
तो खून से सींचा बापू ने।
जब चमन में बहार आयी,
तो कहते हो तेरा कोई काम नहीं ॥

यह नहीं चलेगा... ! एक सुप्रीम कोर्ट के रिटायर्ड जज पर आरोप लगता है। वह जीवनभर नौकरी करता है, पैसे पाता है, अच्छे-बुरे सब होते हैं लेकिन आरोप लगता है तो उसके लिए कमेटी बैठ जाती है और एक सुप्रीम सोल, सर्वोच्च सत्ता का प्रतिनिधित्व करनेवाले आशारामजी बापू पर आरोप लगता है तो वे जेल जाते हैं ! ये संविधान ! एक तरफ संविधान कहता है कि सबको बराबर का अधिकार है तो उनके लिए कोई जाँच कमेटी

क्यों नहीं बैठती ?

इस धर्मयुद्ध में जो हमारे साथ है वही संत है। इस विषम परिस्थिति में जो साथ दे रहे हैं, इससे संतों का अस्तित्व बरकरार रहेगा, संतों की गरिमा बनी रहेगी। कमाल की बात है कि स्वामी विवेकानंदजी के बाद, सौ वर्ष के बाद विश्व में अपने हिन्दू धर्म, सनातन धर्म की तरफ से किसीने राष्ट्र का प्रतिनिधित्व किया, धर्मसंसद को सम्बोधित किया तो आशारामजी बापू ने ! और कुछ लोग कहते हैं कि वे संत नहीं हैं ? बापू तो संतशिरोमणि हैं।

वे चाहते तो विदेश में अधिक समय देते लेकिन उन्होंने अपने देशवासियों के उत्थान के लिए अपनी समय-शक्ति लगायी है। जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी। उन्होंने कहा यह स्वर्ग से भी महान है।

एक राम थे त्रेता के, वे चाहते तो सोने की लंका ले सकते थे लेकिन उनको वह नहीं रुचा। उन्होंने उसे स्वीकार नहीं किया। वे पुनः अयोध्या आये। वर्तमान में तो रामजी का चरित्र तो आशारामजी में ही मिलता है। दूसरा कौन है ? वे चाहते तो अमेरिका जा सकते थे। वे कहीं नहीं गये, भारत में ही रहे। इतिहास गवाह रहा है कि जो अच्छे संत रहे हैं उनको सूलियों पर चढ़ाया गया, ईंट-पत्थरों से मारा गया, जेलों में कैद कर दिया गया, खूब अपमानित किया गया लेकिन बाद में उसी समाज ने उनकी पूजा की और उनके अनुयायी बढ़ते गये, घटे नहीं। याद रखना, बापूजी जब जेल से आयेंगे तो देखना उनके अनुयायियों की संख्या और बढ़ेगी, पूरे विश्व में फैलेगी। ऐसे संतों का आशीर्वाद है भारत पर जिसकी वजह से हमारी संस्कृति और धर्म को कोई मिटा नहीं सकता, कोई दबा नहीं सकता।

स्वामी घनश्यामानंदजी, अध्यक्ष, वैदिक डिवाइन एसोसिएशन : परम पूज्य बापूजी का अपमान वास्तव में हिन्दुत्व का अपमान है। षड्यंत्रकारी सोचते हैं कि शायद इससे करोड़ों लोगों की आस्था को, श्रद्धा को तोड़ने में वे कामयाब हो जायेंगे पर ऐसा सम्भव नहीं हैं। आज लोगों की उनके प्रति सहानुभूति, आस्था, श्रद्धा, सद्भावना और भी बढ़ गयी है।

सुरेन्द्र पालजी, 'महाभारत' धारावाहिक में द्रोणाचार्य और 'महादेव' धारावाहिक में दक्ष प्रजापति का किरदार अदा करनेवाले : साधु-संत हमारे जीवन की धरोहर हैं और हम सबको मिलकर प्रयास करना है कि इस धरोहर को कभी कोई आँच न आये। भारतीय संस्कृति के संरक्षण व समाज के उत्थान के लिए साधु-संतों ने हमेशा अपना एक बहुत बड़ा योगदान समर्पित किया है। जब कभी हम एक अच्छा समाज या परिवार बनाने की बात करते हैं तो संतों की वाणी हमारे कानों में गूँजती है, जिससे हम कभी गलत राह नहीं चलते हैं।

परंतु आज हमारे देश में करोड़ों जनता की आस्था के प्रतीक संतों को मीडिया द्वारा अपमानजनक रूप से दिखाया जा रहा है। जनता और कानून को गुमराह करने का प्रयास किया जा रहा है। तो मेरा सभीसे आग्रह है कि आप लोग अपना अमूल्य योगदान इस धरोहर के संरक्षण में दें।

यदि सत्ता किसी बंदर के हाथ में रहेगी तो वह इधर-उधर कूदता ही रहेगा। आप लोगों को शेर बनना है और शेर बनकर अपनी हक की लड़ाई को जीतना है। जब जीवन में आप लोग शेर बन जायेंगे तो आपको कोई बंदर डरा नहीं पायेगा और हमारे बापू को बंदरों की जरूरत नहीं है, शेर की जरूरत है।

वह दिन दूर नहीं कि बापूजी हमारे बीच होंगे

- वरिष्ठ अधिवक्ता श्री बी. एम. गुप्ता

पूज्य बापूजी सभी साधकों के दिल में बसे हुए हैं। सूक्ष्म रूप से बापूजी आज भी हमारे साथ हैं । २००८ से आज तक आश्रम से संबंधित जो लीगल घटनाएँ हुई हैं उनके बारे में एक छोटी-सी रूपरेखा आपको बता दूँ । दीपेश, अभिषेक नाम के दो बच्चे, जो ५ और ७ साल के थे, गुरुकुल में पढ़ते थे । वे बच्चे किसी कारणवश गुरुकुल से बाहर निकले और रास्ता भूल जाने से या नदी में नहाने के शौक से वे नदी की ओर गये । नदी में बाढ़ का पानी आ रहा था, सम्भवतः दोनों बच्चे डूबकर मर गये । आरोप लगाया गया कि 'बापूजी के आश्रम में मैली विद्या होती है ।' आईजी तक के लेवल के ऑफिसरों ने कई बार आश्रम की धरती को छान मारा लेकिन ऐसी कोई चीज नहीं मिली जिससे सिद्ध होता हो कि यहाँ मैली विद्या का प्रयोग होता है।

देशभर में विभिन्न राज्यों के आदिवासियों को बापूजी के निर्देशानुसार आश्रम द्वारा राशनकार्ड दिया गया है । हर महीने अनाज, कपड़ा, बर्तन आदि जीवनोपयोगी सामग्री के साथ पैसे तथा हर तरह की आर्थिक मदद उनको दी जाती है। रहने के लिए उनको मकान बनाकर दिये गये हैं। यह बात मिशनरियों को सहन नहीं हुई कि 'हम हिन्दू आदिवासियों को क्रिश्चियन बनाते हैं और संत आशारामजी उनकी धर्म-वापसी करके उन्हें फिर से हिन्दू बना लेते हैं तो हमारा तो सारा पैसा और मेहनत बेकार जाती है।' यह वैर-भावना की वृत्ति उन मिशनरियों में आयी और बापूजी को किस तरह जेल में डाला जाय यह सोचते-सोचते उन्हें २०१३ में कुछ लोग मिल गये। पता नहीं किस लालच में वह तैयार हुई और उसने ५ दिन के बाद दिल्ली में जाकर फरियाद लिखवायी । उस लड़की का मेडिकल चेकअप दिल्ली के डॉक्टरों ने सिविल हॉस्पिटल में किया। मैंने पूरी चार्जशीट पढ़ी है, जोधपुर के पूरे इन्वेस्टीगेशन पेपर पढ़े हैं। लड़की द्वारा कहीं भी बलात्कार का आरोप नहीं लगाया गया है। मेडिकल चेकअप में पूरे शरीर पर कहीं भी चोट के निशान नहीं हैं । मेरी समझ में नहीं आता ३७६ और पॉक्सो की कलम ३ और ४ किस आधार पर जोधपुर पुलिस ने लगायी ! उन्होंने इस बहाने बापूजी को गिरफ्तार कर लिया।

गिरफ्तार करने के बाद भी आप देखो, संत के जहाँ कदम पड़ेंगे वह जगह चाहे जितनी भी अपवित्र हो पर वह पवित्र बन जाती है।

आप सोचो, जहाँ पर गुनहगारों की बस्ती है, एक-से-एक छटा हुआ गुनहगार जेल में बंद है, आज उस जेल को भी पवित्र बना दिया बापूजी ने । बापूजी वहाँ कैदियों का जीवन सुधारने के लिए गये हैं और बापूजी ने कैदियों का जीवन सुधार दिया । आज बापूजी गये हैं जोधपुर को, राजस्थान को सुधारने के लिए। चुनाव के बाद बापूजी ने कहा : सत्यमेव जयते।

सत्य पर कुछ समय के लिए धूल चढ़ सकती है लेकिन कायम के लिए नहीं रह सकती। यह सूर्यग्रहण है और ग्रहण किसी खास परियोजना के लिए हुआ है।

अखबारवालों ने तो यहाँ तक खबरें लगा दीं कि बापूजी के ऊपर गुजरात में २८ केस हैं लेकिन मैं यह

बताना चाहता हूँ कि इन दो झूठे केसों के सिवाय बापूजी किसी केस में नहीं हैं। अरे, यह तो सोचो, १२ साल के बाद एफआईआर दर्ज होती है और पुलिस हँसते-हँसते दर्ज कर लेती है। ये सारे गलत आरोप हैं और गलत आरोप कानून की प्रक्रिया के द्वारा ही साबित होंगे कि ये गलत हैं और वह दिन दूर नहीं जब बापूजी देदीप्यमान सूर्य की तरह हमारे बीच आयेंगे।

मैं सभीसे हाथ जोड़कर कहता हूँ कि सुबह उठ के प्रार्थना करो कि बापूजी जल्द-से-जल्द हमारे बीच में आयें। सूक्ष्म रूप में तो हैं लेकिन सदेह हमारे बीच में आयें। रोज सुबह हर व्यक्ति, हर साधक यदि यह प्रार्थना करेगा तो मैं मानता हूँ कि वह दिन दूर नहीं कि बापूजी हमारे बीच होंगे। .

श्री अखिलेश तिवारीजी, अध्यक्ष, ब्राह्मण एकता सेवा संस्था : आज ये राजनेता जो भारत की शपथ लेते हैं संविधान में, वे भारतमाता की सीमाओं की रक्षा नहीं कर पा रहे हैं, धर्म की रक्षा नहीं कर पा रहे हैं। यहाँ लगातार धर्मांतरण हो रहा है।

इन नेताओं से मैं यह आग्रह करूँगा कि तुम सत्ता इसलिए नहीं चला पा रहे हो क्योंकि अभी तक तुमने संतों का जो उपदेश है, उनके जो विचार हैं, जो मार्गदर्शन है, उसको तुम अपने कार्यक्रम में नहीं ले रहे हो; इसलिए लगातार विफल हो रहे हो। यह भारत हमेशा आध्यात्मिक राष्ट्र रहा है।

हमारे परम आदरणीय बापूजी ने संदेश दे दिया है : 'व्यक्ति का पंचतत्त्व शरीर समाप्त होता है लेकिन विचार नहीं।' बापूजी ने बीज लगा दिया है, उसने अब वटवृक्ष का रूप धारण कर लिया है, अतः अब इन पाखंडियों को इस देश को छोड़ के जाना होगा।

श्री नागेन्द्रजी ब्रह्मचारी : ईसाई मिशनरियाँ जो धर्मांतरण कर रही हैं, उन्होंने कुछ राजनेताओं के साथ मिलकर षड्यंत्र रचा है कि कम-से-कम देश के जितने भी संत हैं जो धर्मांतरितों की घर-वापसी का काम कराते हैं, उनके ऊपर नये-नये, किसी प्रकार के केस करवाओ। इसीलिए पॉक्सो का केस लगाया गया ताकि इस धारा से बापूजी को प्रताड़ित किया जा सके।

सावरकर ताई, वीर सावरकरजी के परिवार की कुलवधू : संत आशारामजी बापू को छल-कपट से जेल में रखा गया है। इतिहास साक्षी है कि जो कोई संतों को सताता है, तकलीफ देता है, उसको सजा भुगतनी पड़ती है और जो कोई संतों के चरणों में आश्रय लेता है उसका उद्धार हो जाता है। ऐसे ही संत आशारामजी बापू के चरणों में हम नतमस्तक हैं तो हमारा उद्धार तो तय है लेकिन जिन्होंने सताया है उनको सजा भुगतनी पड़ेगी, परमात्मा का न्याय ऐसा है। तो हम आशा करते हैं कि आशारामजी बापू पर जो गलत इल्जाम लगाये गये हैं वे जल्द-से-जल्द हट जायें और वे हमारे बीच सम्मिलित हो जायें।

साध्वी रामप्रिया, कृष्ण गौशाला, पाटण (गुज.) : बापूजी ने कभी गलत काम नहीं किया क्योंकि मैं खुद उनके आश्रम में रही हुई हूँ।

बापूजी तो अभी जेल से बाहर आये नहीं हैं, मगर राजस्थान का वह हाल हो चुका है जो होना चाहिए था। और बापूजी सिर्फ एक राजस्थान का हाल सुधारने के लिए नहीं गये, देश का हाल सुधारने के लिए गये हैं इसलिए अब केन्द्र में भी वही हाल होनेवाला है।

सनातन धर्म के सुदृढ़, सबल प्रहरी हैं पूज्य बापू

- स्वामी केशवानंदजी महाराज, द्वारका

सनातन हिन्दू धर्म के सुदृढ़ और सबल प्रहरी हमारे पूज्य बापू सभीके दिल में विराजमान हैं। जिनके दिल में सनातन धर्म के लिए, हिन्दुत्व के लिए, भारत देश के लिए, राष्ट्रीयता के लिए इतना प्रेम हो, इतना रहम व इतनी करुणा हो, ऐसे संत के चरणों में कोटि-कोटि वंदन हैं।

बापू के लिए मेरे दिल में जो स्थान है, वह मैं हनुमान होता न, तो चीर के बताता। उनके लिए इतना गहरा स्थान है कि उसे व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। सनातन हिन्दू धर्म के जिन संतों को षड्यंत्रों में फँसाया गया, उन्हें उबारने के लिए बापू हमेशा बड़े उबारक के रूप में सामने आये हैं।

भारत में भारतीयता को जीवित रखना अब बहुत कठिन हो गया है। इस काल में इतनी कठिनाई है कि उतनी कठिनाई विदेशी शासनकाल में भी नहीं थी। स्वार्थी और लम्पट सत्ताधीशों को भारतीय संस्कृति व धर्म से थोड़ा भी प्रेम नहीं है। २० साल पहले टी. एन. शेषन (पूर्व चुनाव आयुक्त) ने बहुत ही निर्भयता के साथ अपने अनुभव व्यक्त किये थे कि देश की दुर्दशा के लिए तीन समाज सबसे अधिक खतरनाक हैं -

(१) राजनेता (२) पुलिस (३) पत्रकार।

यह बिल्कुल सच साबित हो रहा है। ये तीनों मिलकर दोषी को निर्दोष और निर्दोष को दोषी साबित कर सकते हैं। ये लोग न्यायतंत्र को भी अड़चन डालते हैं, प्रजा को गुमराह करते हैं।

संत श्री आशारामजी बापू और उनके परिवार के पीछे तीनों तंत्र सक्रिय हो गये हैं। थोड़े दिनों में यह मुसीबत टल जायेगी और दूध का दूध और पानी का पानी हो जायेगा।

समाज को संतों से ही संस्कार मिलते हैं। समाज संतों में ईश्वरीय अनुभूति करता है। हिन्दू-विरोधी मानसिकता के लोग इसी मर्मस्थान को तहस-नहस कर देना चाहते हैं। किसी व्यक्ति पर आरोप लगें और विरोधी समाज प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से अपना स्वार्थ सिद्ध करने लग जाय यह दुष्ट मानसिकता भारत में बहुत बढ़ गयी है। धार्मिक लोगों का अस्तित्व समाप्त करने के लिए उनकी पवित्रता पर आक्रमण करना बहुत ही तेजधार शस्त्र मान लिया गया है। यह देश के लिए दुर्भाग्य की बात है। इसके लिए सार्वजनिक रूप से हिन्दू समाज को एकमत होकर विचार करना पड़ेगा तथा सक्रिय रूप से रक्षात्मक उपाय करने पड़ेंगे।

टीवी चैनलों पर नियंत्रण के लिए सरकार बनाये दिशानिर्देश

सर्वोच्च न्यायालय ने तीन केन्द्रीय मंत्रालय, भारतीय प्रेस परिषद और अन्य संबंधित संस्थाओं को टीवी चैनलों पर प्रसारित की जानेवाली सामग्री के नियंत्रण के लिए दिशानिर्देश बनाने को कहा है।

मुख्य न्यायाधीश पी. सदाशिवम और न्यायाधीश रंजन गोगोई ने सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, कानून एवं न्याय मंत्रालय, संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय को नोटिस जारी किया है, साथ ही चुनाव आयोग, न्यूज ब्रोडकास्टर्स एसोसिएशन, इंडियन ब्रोडकास्टिंग फाउंडेशन और एडवर्टाइजिंग स्टैंडर्डस काउंसिल ऑफ इंडिया को भी मुंबई के वकील राजीव पांडे द्वारा एक पंजीकृत न्यास 'हिन्दू जनजागृति समिति' द्वारा दाखिल जनहित याचिका पर जवाब देने को कहा है।

आरोप है कि टीवी चैनलों के नियंत्रण के लिए कोई भी नियमन विभाग मौजूद नहीं है।

पांडे का कहना है कि ''यह याचिका जनता के हित में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के प्रभावशाली नियंत्रण के मुद्दे को लेकर सार्वजनिक नैतिकता, सार्वजनिक सभ्यता, सामाजिक शांति और सार्वजनिक व्यवस्था के लिए एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठाती है।''

याचिका कहती है कि 'टीवी चैनलों के नियंत्रण के लिए, जैसे प्रिंट मीडिया के लिए 'भारतीय प्रेस परिषद' है, वैसा कोई नियंत्रण विभाग नहीं है। टीवी ऑडियो-विजुअल मीडिया होने के बावजूद उस पर कोई सेंसरशिप नहीं है। मतलब कोई भी फिल्म जो यूँ तो बिना सेंसर सर्टिफिकेट के रिलीज नहीं हो सकती, वह सीधी टीवी चैनलों पर रिलीज हो सकती है।'

मेरी क्रांतिकारी योजना

- स्वामी विवेकानंदजी

(मद्रास के विक्टोरिया हॉल में दिया गया भाषण)

(अंक २५१ से आगे)

जब मैं अमेरिका जा रहा था बिना किसी परिचय-पत्र या जान-पहचान के, एक धनहीन, मित्रहीन, अज्ञात संन्यासी के रूप में, तब मैंने थियोसॉफिकल सोसायटी के नेता से भेंट की। स्वभावतः मैंने सोचा था कि जब 'ये अमेरिकावासी हैं और भारतभक्त हैं तो सम्भवतः अमेरिका के किसी सज्जन के नाम मुझे एक परिचय-पत्र दे देंगे।' किंतु जब मैंने उनके पास जाकर इस प्रकार के परिचय-पत्र के लिए प्रार्थना की तो उन्होंने पूछा : ''क्या आप हमारी सोसायटी के सदस्य बनेंगे ?''

मैंने उत्तर दिया : ''नहीं, मैं किस प्रकार आपकी सोसायटी का सदस्य हो सकता हूँ ? मैं तो आपके अधिकांश सिद्धांतों पर विश्वास नहीं कर सकता।''

उन्होंने कहा : ''तब मुझे खेद है, मैं आपके लिए कुछ भी नहीं कर सकता।''

क्या यही मेरे लिए रास्ता बना देना था ? मैं मद्रासी मित्रों की सहायता से अमेरिका गया।

धर्म-महासभा के कई मास पूर्व ही मैं अमेरिका पहुँच गया। मेरे पास रुपये बहुत कम थे और वे शीघ्र ही समाप्त हो गये। इधर ठंड का मौसम भी आ गया और मेरे पास थे सिर्फ गर्मी के कपड़े। उस घोर शीतप्रधान देश में 'मैं आखिर क्या करूँ ?' यह कुछ सूझता न था। यदि मैं मार्ग में भीख माँगने लगता तो मैं जेल भेज दिया जाता। मैंने अपने मद्रासवासी मित्रों के पास तार भेजा। यह बात थियोसॉफिस्टों को मालूम हो गयी और उनमें से एक ने लिखा : '' अब शैतान शीघ्र ही मर जायेगा। ईश्वर की कृपा से अच्छा ही हुआ। बला टली।''

तो क्या यही मेरे लिए रास्ता बना देना था ? मैंने वहाँ धर्म-महासभा में कई थियोसॉफिस्टों से बातचीत करने और मिलने-जुलने की चेष्टा की। उन लोगों ने जिस अवज्ञाभरी दृष्टि से मेरी ओर देखा वह आज भी मेरी नजरों पर नाच रही है। मानो वह कह रही थी : 'यह कहाँ का क्षुद्र कीड़ा यहाँ देवताओं के बीच आ गया ?'

मैं पूछता हूँ क्या यही मेरे लिए रास्ता बना देना था ?

धर्म-महासभा में मेरा बहुत नाम तथा यश हो गया पर प्रत्येक स्थान पर इन लोगों ने मुझे दबाने की चेष्टा की, थियोसॉफिकल सोसायटी के सदस्यों को मेरे व्याख्यान सुनने की मनाही कर दी गयी।

हाँ, तो इस प्रकार उन लोगों ने अमेरिका में मेरे लिए मार्ग प्रशस्त किया ! पर वे यहीं पर नहीं रुके, वे दूसरे विरोधी पक्ष - ईसाई मिशनरियों से जा मिले। इन ईसाई मिशनरियों ने मेरे विरुद्ध ऐसे-ऐसे भयानक झूठ गढ़े, जिनकी कल्पना तक नहीं की जा सकती। यद्यपि मैं उस परदेश में अकेला और मित्रहीन था तथापि उन्होंने प्रत्येक स्थान में मेरे चरित्र पर दोषारोपण किया। उन्होंने मुझे प्रत्येक मकान से बाहर निकाल देने की चेष्टा की और जो भी मेरा मित्र बनता उसे मेरा शत्रु बनाने का प्रयत्न किया। उन्होंने मुझे भूखा मार डालने की कोशिश की।(क्रमशः)

पत्रकारिकता के आदर्श पं. मदनमोहन मालवीयजी

इंग्लैंड से अध्ययन समाप्त कर भारत लौटे हुए राजा रामपाल सिंह ने 'हिन्दुस्तान' नामक साप्ताहिक पत्र प्रकाशित करना आरम्भ किया था, जिसे वे किसी प्रकार चला रहे थे लेकिन अब वे चाहते थे कि इस पत्र को दैनिक पत्र बना दिया जाय किंतु उसके लिए उनको कोई योग्य सम्पादक नहीं मिल पा रहा था। कलकत्ता अधिवेशन में मालवीयजी का विद्वत्तापूर्ण वक्तृत्व सुनकर वे उन पर मुग्ध हो गये और उन्होंने निश्चय किया कि वे मालवीयजी पर यह भार सौंपेंगे।

राजा रामपाल सिंह ने अवसर पाकर मालवीयजी से अपने पत्र के सम्पादन के लिए निवेदन किया। राजा साहब को पता था कि पंडितजी को ६० रुपये मासिक वेतन में मिलते हैं। उन्होंने मालवीयजी के सामने २०० रुपये मासिक का प्रस्ताव रखा। इस अवसर को स्वीकार करने में मालवीयजी संकोच कर रहे थे क्योंकि मालवीयजी के संस्कार शुद्ध व सनातनी थे। वे धर्मनिष्ठ ब्राह्मण थे और कठोर वैष्णव जीवन-पद्धति में उनका पालन-पोषण हुआ था। जबकि राजा रामपाल सिंह इंग्लैंड से पढ़कर आये थे और उनकी विलासपूर्ण जमींदारी की जीवन-पद्धति मालवीयजी से भिन्न ही नहीं अपितु सर्वथा विपरीत भी थी। साथ ही मालवीयजी में लोभवृत्ति लेशमात्र भी नहीं थी।

मालवीयजी यह मानते थे कि सरकारी स्कूल के साधारण अध्यापक से पत्रकारिता का जीवन कहीं व्यापक और उच्च स्तर का है, साथ ही पत्रकार बनने की उनकी बड़ी लालसा भी थी। परंतु राजा रामपाल सिंह के साथ तालमेल बैठने के विषय में उनका मन शंकालु था। अतः वे उनके प्रलोभनों से विचलित न हुए।

कैसे अद्भुत सन्मार्गी थे मालवीयजी ! जहाँ आजकल मीडिया में ऊँचे पदों पर बैठे कुछ लोग पैसों के लालच में अपना ईमान आदि सब बेच देने के लिए आतुर हो जाते हैं, देशद्रोह, संस्कृतिद्रोह, समाजद्रोह तक करने को तैयार हो जाते हैं, वहीं मालवीयजी केवल किसीकी जीवन-पद्धति से तालमेल न बैठने पर हाथ मिलाने से सकुचा रहे थे।

मालवीयजी जानते थे कि इस पत्रकारिता के माध्यम से वे देश में जागरूकता ला सकते हैं। उधर राजा साहब का आग्रह भी बढ़ता जा रहा था। अंत में मालवीयजी ने बहुत सोच-विचारकर उन्हें संदेश भिजवाया कि 'वे इस शर्त पर 'हिन्दुस्तान' का सम्पादन स्वीकार करेंगे कि राजा साहब जिस समय शराब पिये हुए हों उस समय किसी भी प्रकार के विचार-विमर्श अथवा वार्तालाप के लिए पंडितजी को अपने पास न बुलायें। यदि उस अवस्था में किसी दिन उन्होंने उनको बुलाया तो उसी दिन वे सम्पादन छोड़ देंगे।'

राजा साहब मालवीयजी की निष्ठा व कार्यकुशलता से इतने मुग्ध थे कि वे किसी भी शर्त पर उन्हें सम्पादक बनाने के लिए उत्सुक थे। उन्होंने पंडितजी की शर्त को स्वीकार कर लिया। इस प्रकार जुलाई १८८७ में मालवीयजी ने अपने अध्यापक पद से त्यागपत्र दे दिया और 'हिन्दुस्तान' का सम्पादन सँभाल लिया।

देश और समाज के लिए सच्ची व हितभरी खबरें छापते हुए ढाई वर्षों तक मालवीयजी ने इस पत्र के माध्यम से देश सेवा की। उनके इस देशसेवा के भाव ने समाज में खूब जागृति ला दी, 'हिन्दुस्तान' देशभर में लोकप्रिय पत्र माना जाने लगा था। साथ ही अपनी धर्मपूर्ण, हितपूर्ण, सच्ची लेखनी के दम पर मालवीयजी को भी लोकप्रियता खूब मिली।

आज के मीडिया के बंधुओं को मालवीयजी के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए और उनकी चिरस्थायी लोकप्रियता के कारणों की ओर अवश्य ध्यान देना चाहिए।

एक दिन राजा रामपाल सिंह ने पंडितजी को किसी महत्त्वपूर्ण विषय पर विचार-विमर्श करने के लिए रात को बुलाया। उस समय वे भूल गये थे कि उन्होंने मद्यपान किया हुआ है। मालवीयजी को आते ही वातावरण में दुर्गंध आयी, वे समझ गये कि राजा साहब मदमस्त हैं। फिर भी मालवीयजी वहाँ बैठे, राजा से जिस विषय पर परामर्श करना था वह किया। बातचीत को निपटाकर मालवीयजी अपने कक्ष में आये और तुरंत अपना त्यागपत्र लिख दिया। दूसरे दिन त्यागपत्र राजा साहब को देते हुए कहा : ''हमारी आपकी एक शर्त थी वह शर्त कल आपने तोड़ दी है। यह लीजिये मेरा त्यागपत्र। मैं अब यहाँ से जा रहा हूँ।''

राजा साहब को स्मरण हो आया। उन्हें इस आकस्मिक संकट से बड़ा आघात लगा। उन्होंने मालवीयजी की काफी अनुनय-विनय की किंतु वे टस-से-मस नहीं हुए। उनका परिवार किस प्रकार पलेगा - इसकी चिंता किये बिना उन्होंने राजा साहब से विदाई ली और प्रयाग लौट आये। यह संयोग की ही बात थी कि उन्हीं दिनों पं. अयोध्यानाथ ने अंग्रेजी में 'इंडियन ओपीनियन' पत्र निकालना आरम्भ किया था। (शेष पृष्ठ २६ पर)

(पृष्ठ २३ से 'पत्रकारिता के आदर्श...' का शेष)

उनके निवेदन पर मालवीयजी ने इस पत्र के सह-सम्पादक के रूप में कार्यभार सँभाला, जिससे इस पत्र की भी प्रसिद्धि होने लगी।

मालवीयजी ऐसे दृढ़निश्चयी थे कि उन्होंने पत्रकारिता की जिम्मेदारी को समझते हुए अपने व्यवसाय को आत्मसंतोष की प्राप्ति का साधन और देशसेवा का अवसर बनाया। उन्होंने भले धन, पद व यश की कभी परवाह नहीं की परंतु क्या देशवासियों के दिलों से ऐसे महामना की यश-कीर्ति को कोई मिटा सकता है ?

पुण्यदायी तिथियाँ

३० जनवरी : अहमदाबाद आश्रम स्थापना दिवस

१३ फरवरी : गुरुपुष्यामृत योग (सूर्योदय से रात्रि १०-२३ तक), विष्णुपदी संक्रांति (पुण्यकाल : सूर्योदय से दोपहर १२-५३ तक)

१४ फरवरी : मातृ-पितृ पूजन दिवस

अत्याचारियों को अत्याचार का फल भुगतना पड़ेगा

- जोगी ममलानाथ

(भारत के सम्राट भर्तृहरि को अपूर्व सुंदरी रानी पिंगला, जिसे वे बेहद प्यार करते थे, की बेवफाई से संसार से वैराग्य हो गया। उन्होंने गुरु गोरखनाथजी की शरण ली व उनके शिष्य बन गये। कालांतर में राजा भर्तृहरि भी एक महान योगी बने तथा 'जोगी भरथरीनाथ' कहलाये।)

अलवर के निकट नाथ सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध सिद्ध स्थान 'भरथरीनाथ आश्रम' के जोगी ममलानाथजी ने कहा : ''संत आशारामजी बापू तो सिद्धों के भी सिद्ध हैं। उन पर इस समय जितने अत्याचार किये जा रहे हैं उसे भारत के सभी संत-महात्मा देख रहे हैं। अत्याचारियों को इसका फल इसी जीवन में और यहीं, इसी भारतभूमि पर भुगतना पड़ेगा। रावण जैसे शक्तिशाली राजा का नाश भी संतों को सताने से हुआ था। रावण के तो लाख पुत्र और सवा लाख नाती थे फिर भी उसके कुल में कोई दीया-बाती करनेवाला भी नहीं बचा।

यह भारतभूमि है। यहाँ हिन्दू धर्म को नष्ट करने के लिए बड़े-बड़े बलवान अत्याचारी बाहर से भी आये पर हिन्दू धर्म को नष्ट नहीं कर पाये। हिन्दू धर्म सत् है और सत् का कभी नाश हो ही नहीं सकता।

सिकंदर जैसे दुनिया को जीतनेवाले ने भी इस देश में आकर संतों के आगे माथा झुकाया था। हुकूमत के नशे में आकर आशारामजी बापू जैसे संत पर कहर तो ढहा रहे हैं पर हम और आप अपनी इन्हीं आँखों से इनको भुगतते हुए भी जल्दी देखेंगे, न इनकी हुकूमत रहनेवाली है और न ही कुल-खानदान।''

पूज्य बापूजी एवं श्री नारायण साँईं की रिहाई के लिए हुआ १०८ त्रिकुंडी महायज्ञ

५ जनवरी को अहमदाबाद आश्रम में आयोजित इस महायज्ञ में पूरे गुजरात से आये हजारों लोगों ने वैदिक मंत्रों से आहुतियाँ दीं। यह महायज्ञ सुबह ८ से शाम ५ बजे तक चला। श्रद्धालुओं को देख के ऐसा लग रहा था जैसे हर एक आहुति में वे अपने गुरुजी को ही पुकार रहे हैं। इस यज्ञ में गुरुकुल के ऋषिकुमारों ने भी भाग लिया। इस पूरे कार्यक्रम का सीधा प्रसारण इंटरनेट पर उपलब्ध 'मंगलमय चैनल' के माध्यम से देश-विदेश में हो रहा था। इस महायज्ञ में अमेरिका से आये भक्तों ने भी भाग लिया। अमेरिका के कनुभाई पटेल ने कहा : ''षड्यंत्रकारियों ने कितना भी प्रयास किया हमारी श्रद्धा तोड़ने का परंतु पूज्य बापूजी हमारे दिल में बसे हुए हैं। षड्यंत्रकारी न हमारी श्रद्धा को तोड़ पाये हैं और न आगे तोड़ सकेंगे।''

सर्वफलप्रदायक माघ मास व्रत

- पूज्य बापूजी

(माघ मास : १६ जनवरी से १४ फरवरी)

पुण्यदायी स्नान सुधारे स्वभाव

माघ मास में प्रातःस्नान (ब्राह्ममुहूर्त में स्नान) सब कुछ देता है। आयुष्य लम्बा करता है, अकाल मृत्यु से रक्षा करता है, आरोग्य, रूप, बल, सौभाग्य व सदाचरण देता है। जो बच्चे सदाचरण के मार्ग से हट गये हैं उनको भी पुचकार के, इनाम देकर भी प्रातःस्नान कराओ तो उन्हें समझाने से, मारने-पीटने से या और कुछ करने से वे उतना नहीं सुधर सकते हैं, घर से निकाल देने से भी इतना नहीं सुधरेंगे जितना माघ मास में सुबह का स्नान करने से वे सुधरेंगे।

तो माघ स्नान से सदाचरण, संतानवृद्धि, सत्संग, सत्य और उदारभाव आदि का प्राकट्य होता है। व्यक्ति की सुरता माने समझ उत्तम गुणों से सम्पन्न हो जाती है। उसकी दरिद्रता और पाप दूर हो जाते हैं। दुर्भाग्य का कीचड़ सूख जाता है। माघ मास में सत्संग-प्रातःस्नान जिसने किया, उसके लिए नरक का डर सदा के लिए खत्म हो जाता है। मरने के बाद वह नरक में नहीं जायेगा। माघ मास के प्रातःस्नान से वृत्तियाँ निर्मल होती हैं, विचार ऊँचे होते हैं। समस्त पापों से मुक्ति होती है। ईश्वरप्राप्ति नहीं करनी हो तब भी माघ मास का सत्संग और पुण्यस्नान स्वर्गलोक तो सहज में ही तुम्हारा पक्का करा देता है। माघ मास का पुण्यस्नान यत्नपूर्वक करना चाहिए।

यत्नपूर्वक माघ मास के प्रातःस्नान से विद्या निर्मल होती है। मलिन विद्या क्या है ? पढ़-लिख के दूसरों को ठगो, दारू पियो, क्लबों में जाओ, बॉयफ्रेंड-गर्लफ्रेंड करो - यह मलिन विद्या है। लेकिन निर्मल विद्या होगी तो इस पापाचरण में रुचि नहीं होगी। माघ के प्रातःस्नान से निर्मल विद्या व कीर्ति मिलती है। 'अक्षय धन' की प्राप्ति होती है। रुपये-पैसे तो छोड़ के मरना पड़ता है। दूसरा होता है 'अक्षय धन', जो धन कभी नष्ट न हो उसकी भी प्राप्ति होती है। समस्त पापों से मुक्ति और इन्द्रलोक अर्थात् स्वर्गलोक की प्राप्ति सहज में हो जाती है।

'पद्म पुराण' में भगवान राम के गुरुदेव वसिष्ठजी कहते हैं कि 'वैशाख में जलदान, अन्नदान उत्तम माना जाता है और कार्तिक में तपस्या, पूजा लेकिन माघ में जप, होम और दान उत्तम माना गया है।'

प्रिय वस्तु का आकर्षण छोड़कर उसको दान में दे दें और नियम-पालन करें जप-तप से तो आपके मन की गलत आदत मिटाने की शक्ति बढ़ जाती है। इस मास में सकामभाव से, स्वार्थ से भी अगर स्नान करते हैं तब भी मनोवांछित फल प्राप्त होता है लेकिन कोई स्वार्थ नहीं हो और भगवान की प्रीति के लिए, भगवान की प्राप्ति के लिए व्रत-स्नानादि करते हैं, सत्संग सुनते हैं तो निष्काम मोक्षपद की प्राप्ति हो जाती है। सामर्थ्यपूर्वक प्रतिदिन हवन आदि करें तो अच्छा, नहीं तो जप तो जरूर करना चाहिए। माघ मास में अगर कल्पवास करने को मिले अर्थात् एक समय भोजन, ब्रह्मचर्यव्रत-पालन, भूमि पर शयन आदि तो चाहे जितना भी असमर्थ हो फिर भी उसमें सामर्थ्य - मानसिक सामर्थ्य, बौद्धिक सामर्थ्य, आर्थिक सामर्थ्य उभरने लगता है। माघ मास में तिल का उबटन, तिलमिश्रित जल से स्नान, तर्पण, तिल का हवन, तिल का दान और भोजन में तिल का प्रयोग - ये कष्टनिवारक, पापनिवारक माने गये हैं।

इस मास में पति-पत्नी के सम्पर्क से दूर रहनेवाला व्यक्ति दीर्घायु होता है और सम्पर्क करनेवाले के आयुष्य का नाश होता है। भूमि पर शयन अथवा गद्दा हटाकर पलंग पर सादे बिस्तर पर शयन करें।

धन में, विद्या में कोई कितना भी कमजोर हो, असमर्थ हो उसको उतने ही बलपूर्वक माघ स्नान कर लेना चाहिए। इससे उसे धन में, बल में, विद्या में वृद्धि प्राप्त होगी। माघ मास का प्रातःस्नान असमर्थ को सामर्थ्य देता है, निर्धन को धन, बीमार को आरोग्य, पापी को पुण्य व निर्बल को बल देता है।

माघ मास में विशेष करणीय

जो माघ मास में गुरुदेव का पूजन करते हैं उनको पूरा मास स्नान करने का फल प्राप्त होता है - ऐसा 'ब्रह्म पुराण' में लिखा है। इस मास में पुण्यस्नान, दान, तप, होम और उपवास भयंकर पापों का नाश कर देते हैं और जीव को उत्तम गति प्रदान करते हैं।

माघ मास के महत्त्वपूर्ण ३ दिन

माघ मास का इतना प्रभाव है कि इसकी हर तिथि पुण्यमय होती है और इसमें सब जल गंगाजल तुल्य हो जाते हैं। सतयुग में तपस्या से जो उत्तम फल होता था, त्रेता में ज्ञान के द्वारा, द्वापर में भगवान की पूजा के द्वारा और कलियुग में दान-स्नान के द्वारा तथा द्वापर, त्रेता, सतयुग में पुष्कर, कुरुक्षेत्र, काशी, प्रयाग में १० वर्ष शुद्धि, संतोष आदि नियमों का पालन करने से जो फल मिलता है, वह कलियुग में माघ मास में, जो सभी में श्रेष्ठ है, अंतिम ३ दिन (त्रयोदशी, चतुर्दशी और पूर्णिमा) प्रातःस्नान करने से मिल जाता है।

उत्तम संतानप्राप्ति के लिए

५ जनवरी २०१४ से १८ सितम्बर २०१४ तक का समय गर्भाधान के लिए अति उत्तम है।

जो बोलता है फलाने ने दुःख दिया, फलाने ने दुःख दिया, वह कुछ नहीं जानता है, अक्ल मारी हुई है उसकी। कुछ लोगों ने करोड़ों रुपये खर्च करके बापू का कुप्रचार कराया और यदि मैं बोलता कि 'इन्होंने कुप्रचार करके मुझे दुःखी किया, हाय ! दुःखी किया' तो मैं सचमुच 'दुःख-मेकर' (दुःख बनानेवाला) हो जाता। वे कुप्रचारवाले कुप्रचार करते रहे और हम अपनी मस्ती में रहे तो मेरे पास तो सत्संगियों की भीड़ और बढ़ गयी। यह नियति होगी।

'हरि' की महिमा अपरम्पार

- पूज्य बापूजी

इंदिरा गांधी जिनके चरणों में मत्था टेकती थी वे आनंदमयी माँ अपने आश्रम में भी आयी थीं। मैं भी उनके आश्रम में आता-जाता रहता। इंदिरा गांधी की गुरु आनंदमयी माँ जहाँ मत्था टेकती थीं वे थे हरिबाबा।

एक बार हरिबाबा यात्रा करते हुए कहीं जा रहे थे। रास्ते में एक किसान पर उनकी नजर पड़ी। वह हल चला रहा था। बाबा तो बाबा होते हैं भाई ! आ गयी रहमत उस पर। किसान के पास गये और बोले : ''भाई ! दोपहर हो गयी है, आओ अब थोड़ी देर हरिनाम कीर्तन करते हैं।''

किसान बोला : ''बाबा ! आपका रास्ता अलग है, मेरा अलग है। आप तो रोटी माँगकर खा लोगे। मैं तो बाल-बच्चेवाला हूँ। यह हल छोड़कर तुम्हारे साथ कीर्तन करूँगा तो मेरा क्या होगा ?''

''देख भैया ! तेरा हल मैं चलाता हूँ, तू थोड़ी देर हरिनाम ले ले। हरि ॐ... हरि ॐ... प्यारे ॐ... हरि ॐ... ऐसा कर ले।''

''बाबा ! आप अपने रास्ते जाओ, काहे को मुझे परेशान कर रहे हो ?''

''अरे बेटा ! परेशानी तो तब है जब हरि से विमुख होते हैं।''

ऐसा कह के बाबा ने बैल की रस्सी एक हाथ में ले ली और दूसरे हाथ से हल का डंडा पकड़ा और उसको बोले : ''तू यहाँ हरि ॐ... हरे राम... हरे राम... नाम ले। मैं तेरा हल चलाता हूँ।''

बाबा का ऐसा जादू छा गया कि वह बोला : ''अच्छा बाबा ! तो क्या बोलना है ?''

बोले : ''हरि ॐ... हरि ॐ... हे हरि... हरि... जैसा भी आये कहो। हरि... हरि... यह दो अक्षर का नाम लेगा तो अभी-अभी तेरा मंगल हो जायेगा। क्योंकि जो पाप हर ले वह है हरि, हर समय जो साथ-सहकार दे वह है हरि, हर दिल में जो बसा है वह है हरि।

हरति पातकानि दु:खानि शोकानि इति श्रीहरि।

बेटे ! हरि की महिमा अपरम्पार है ! तू महिमा सुन - न सुन केवल हरि... हरि... बोल।''

बाबा ने उसके सामने थोड़ी देर तो हरि का नाम लिया। फिर तो वह निर्दोष था, ज्यादा बेईमान, कपटी, छली नहीं था। उसके पाप तो हरि ने हर लिये और वह जोर-जोर से 'हरि ॐ... हरि ॐ...' कहकर झूमने लगा। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। नृत्य के साथ वह ऐसा पावन हुआ कि उसकी बुद्धि में बुद्धिदाता का अनोखा दिव्य प्रभाव आया। उस किसान ने बाबा के हाथ से बैलों की रस्सी ले ली और उनके चरण पकड़कर फूट-फूट के रोने लगा : ''बाबा ! बाबा !...''

बोले : ''क्या है बेटा ?''

''बाबा ! बाबा !...''

ऐसा तो वह प्यार-प्यार में बावरा हो गया कि आसपास के लोग दौड़-दौड़कर आये और बोले : ''क्या बात है ? पागल हो गया है क्या ?''

बोला : ''हाँ, मैं पागल हो गया हूँ। गल को मैंने पा लिया है कि कैसे हरि को बुलाकर अपने हृदय में

प्रकट किया जाय। मैंने तो बाबा का पहले अपमान कर दिया था लेकिन बाबा ने अपमान करनेवाले को भी सम्मानित बना दिया। बाबा ! बाबा !...''

उसका चेहरा देखकर दूसरे किसानों के चेहरे भी खिल उठे।

''अरे, मेरी तरफ देखते क्या हो प्यारे ! बोलो हरि ॐ... हरि ॐ...''

वे किसान भी बोलने लगे : ''हरि ॐ... हरि ॐ...'' सारा टोला ''हरि ॐ... हरि ॐ...'' ऐसे करते-करते सबको ऐसा रंग लगा कि हरि के नाम से आसपास के सारे किसान तो इकट्ठे हुए ही, साथ ही गाँव में जो आज तक अतिवृष्टि, अनावृष्टि, झगड़े, मार-काट, शराब, यह-वह होता था, वे सारे ऐब चले गये, सारी समस्याएँ चली गयीं। हरिपुर ग्राम बन गया।

संत कबीरजी बोलते हैं : साहेब है मेरो रंगरेज। वह साहेब मेरा हरि है जो हर दिल में रहता है। उस परमात्मा के हजार नामों में से एक नाम है 'हरि'। जो पाप, दुःख हर लेता है, अपनी कृपा भर देता है, हरदम रहता है, मरने के बाद भी हमारा साथ नहीं छोड़ता उस भगवान का नाम हरि है। तो भगवान के नाम में अद्भुत शक्ति है।

सतयुग में बारह साल सत्यव्रत की तपस्या करे तब जाकर कुछ मिले, त्रेता में तप करे, द्वापर में यज्ञ व ईश्वर की उपासना करे लेकिन कलियुग में तो सिर्फ 'हरि ॐ... हरि ॐ...' करे तो ऐसा काम बने -

कलिजुग केवल हरि गुन गाहा।
गावत नर पावहिं भव थाहा।।
(श्री रामचरित. उ.कां. : १०२.२)

इकरार खान, प्रमुख, ऑल इंडिया मुस्लिम इत्तिहात कमेटी : मुझे तो बड़ा फक्र है कि मैं एक हिन्दुस्तानी नागरिक हूँ और ऐसे हिन्दुस्तान में रहता हूँ जहाँ हमारे आशारामजी बापू हैं। आशारामजी बापू एक सच्चे संत हैं। जब मैं टीवी पर न्यूज देखता तो मुझे बड़ा दुःख होता था, मैंने सोचा कि 'बापूजी के दर्शन जरूर करने चाहिए।' तो मैं जोधपुर गया। वहाँ जब मैं हाईकोर्ट पहुँचा तो बापूजी के दर्शन मुझे बहुत दूर से हुए, संतुष्टि नहीं मिली। मैं घर आ गया। अब घर पर आ के मेरे दिमाग में यही था कि 'मैं बापूजी के दर्शन कैसे करूँ, कैसे करूँ ?' तो बापूजी कैसेट में कहते हैं न कि 'ॐ ॐ ॐ मेरे प्यारेजी, ॐ ॐ ॐ मेरे प्यारे हरि, ॐ ॐ ॐ मेरे प्यारे सद्गुरुजी...' तो ऐसे ही मैं एक नाम और जोड़ के गाता हूँ 'ॐ ॐ ॐ मेरे प्यारे आशारामजी...' तो मेरे दिल को बड़ा सुकून मिलता है। सोने से पहले ११ बार मैंने यही शुरू किया। मैंने कहा : 'आप मेरे सपने में आइये, मुझे दर्शन तो दीजिये।' उस रात बापूजी मेरे सपने में आये, मुझे दर्शन दिये, मुझसे बात भी हुई, कहा : 'तू दुबारा आ। मैं तुझे दर्शन दूँगा और करीब से दूँगा।' फिर मैं पहुँचा जोधपुर। वहाँ पुलिस साधकों के साथ थोड़ी बदसलूकी कर रही थी, पकड़ा-पकड़ी। तो बापूजी की वैन आयी और आप यकीन मानिये, बापूजी को बहुत ही नजदीक से देखा। इतने सुंदर, इतने खूबसूरत, बड़ी-बड़ी आँखें... इतनी खूबसूरती जैसे पाक बुजुर्ग होते हैं न, ऐसे !

मैं मुस्लिम संस्था का एक लीडर हूँ। बापूजी के करीब ६ करोड़ जो भक्त हैं, उनके प्यारे हैं, मायना रखते हैं। कोई नहीं जुड़ता है जब तक कि आदमी के अंदर सच्चाई न हो, तो बापूजी के अंदर सच्चाई है।

संत-सम्मेलन, सूरत

भागवत कथाकार श्री श्रवणरामजी महाराज, जोधपुर : संत आशारामजी बापू के खिलाफ यह एक साजिश है, षड्यंत्र है । विदेशी षड्यंत्रकारी और धर्मांतरण करनेवाले लोग संतों एवं हिन्दू समाज के साथ धोखा कर रहे हैं । सभी धर्मप्रेमी देशवासी एकजुट हो के इसका प्रतिकार करें ।

श्री मुकेश खन्ना, 'महाभारत' धारावाहिक में भीष्म पितामह तथा 'शक्तिमान' धारावाहिक में शक्तिमान का किरदार अदा करनेवाले : हमारा देश संतों का देश है । सबसे बड़ा जो हमारे पास बल है, वह संत-समाज का बल है । जो संतों का निरादर कर रहा है, उसे दंड दीजिये और यह बताइये कि हमारा देश पूरे विश्व को शिक्षा देता आया है, गुरुकुल की परम्परा हमारे यहाँ से निकली है ।

मुझे मीडिया से भी बहुत एतराज है । अमेरिका में राजनायिका के साथ में जो व्यवहार हुआ, उस व्यवहार पर पूरा देश खड़ा हो गया । सलमान खुर्शीद ने कहा कि 'हम चैन से नहीं बैठेंगे जब तक उनके सम्मान को वापस नहीं लाया जाय' और ये संत लोग हमारी संस्कृति के राजनायक हैं, इनके प्रति आप इस प्रकार का बर्ताव क्यों नहीं करते ?

ये मीडियावाले कब से कमर्शियल बन गये हैं ? मीडिया का काम है सिर्फ न्यूज दिखाना । आप यह मत कहिये कि 'घटना सबसे पहले सिर्फ हम दिखा रहे हैं, खौफ फैल गया है...' नहीं, हम सोचेंगे कि घटना खौफनाक है कि नहीं और कौन पहले दिखा रहा है । आप सिर्फ दिखाइये । यह रिपोर्टिंग नहीं, केवल टीआरपी के लिए अंधी दौड़ है । बंद कीजिये इसको ।

भागवताचार्य साध्वी सरस्वतीजी : आज संतों के ऊपर साजिशें की जा रही हैं। जब से मैं होश सँभालने के लायक हुई हूँ, तब से मैंने बापूजी के बारे में बहुत सुना है, बहुत जाना है।

बापूजी के साथ ऐसा क्यों हो रहा है ? क्योंकि बापूजी धर्म के लिए, सनातन संस्कृति के लिए और धर्मांतरण रोकने के लिए मुख्य रूप से कार्य कर रहे थे। मिशनरियों ने देखा कि 'ये संत तो हमारा धंधा चौपट करने में लगे हुए हैं तो क्यों न पहले इन पर ऐसे आरोप लगाये जायें कि इनका जो धर्म का स्तम्भ है वह टूट जाय।'

स्वामी संतोषानंदजी, चित्रकूट : संतों को बदनाम करने की एक परम्परा-सी चल पड़ी है। परम पूज्य बापूजी की बात करें तो उनके खिलाफ यह षड्यंत्र २००८ से चल रहा है। न जाने कितने घिनौने, घृणित, मनगढ़ंत आरोप बनाकर बापूजी के ऊपर थोपे गये पर एक भी आरोप सिद्ध नहीं हुआ, होनेवाला भी नहीं है। जो भक्तों और साधकों के हृदयों को तड़पायेंगे उन षड्यंत्रकारियों की जिंदगी हराम हो जायेगी। जिन्होंने पहले ऐसा किया है जरा उनकी दुर्दशा का चिंतन करो, आज कहाँ हैं, क्या गति है उनकी !

मुझे एक महाराजजी ने पूछा : ''ऐसा क्यों हो रहा है ?''

हमने कहा : ''महाराज ! मुझे तो ऐसा लग रहा है कि हम आपस में कहीं-न-कहीं संगठित नहीं हैं। नहीं तो इनकी क्या औकात है जो हमारे संतों पर, महामनीषियों के ऊपर आरोप लगाकर एक क्षण भी रह लें।''

समस्त भारतवासियों से मेरी प्रार्थना है कि 'यह समय जागने का है। हम जागृत हों। जिस दिन जागृत हो गये उसके बाद संतों पर ऐसे अत्याचार नहीं हो पायेंगे।'

पूज्य बापूजी जैसे संतों के लिए भागवत में भगवान शुकदेवजी ने कहा है : 'ब्रह्मज्ञानी संत साक्षात् भगवान हैं, भगवत्स्वरूप हैं और ज्ञान के प्रदीपक हैं।' करोड़ों-करोड़ों हृदयों को ज्ञान के प्रकाश से जगमगाया है हमारे पूज्य बापूजी ने। उन पर अनर्गल आरोप लगवाये जाने से आज करोड़ों-करोड़ों हृदय व्यथित हैं।

श्री राजशेखर उपाध्याय, 'रामायण' धारावाहिक में जाम्बवंतजी का किरदार अदा करनेवाले : करोड़ों साधकों के हृदय पीड़ित हैं क्योंकि हमारे पूज्य बापूजी के ऊपर मिथ्या आरोप लगा के उन्हें हिरासत में रखा गया है। आज नहीं तो कल, निश्चित है कि सत्य की जीत होगी और हमें उनके दर्शन फिर से होंगे।

महामंडलेश्वर श्री रामस्वरूप ब्रह्मचारी, ऋषिकेश : मैंने जोधपुर, मणई की वह कुटी देखी, साफ-सुथरी, छोटी-सी कुटी है। और जो वहाँ रहते हैं उन लोगों से मैं मिला तो मुझे पता चला कि साजिशकर्ताओं द्वारा कितना बड़ा झूठ बोला गया है ! झूठ की भी कोई सीमा होती है पर यहाँ तो सीमा ही नहीं रही झूठ की ! वहाँ पर ऐसा काम कोई हो ही नहीं सकता।

बापूजी जो कष्ट सह रहे हैं, यह खाली नहीं जायेगा। एक-एक मिनट का हिसाब इन लोगों से लिया जायेगा। जो बापूजी को दंडित करवाना चाहते हैं वे स्वयं दंडित होंगे। बहुत सारे संतों को इन्होंने जेल में डाला है, शंकराचार्यजी से ले के आम संत तक। सभी संतों को तो लोग जानते भी नहीं, ऐसे-ऐसे संत हैं जो आज तक जेल से बाहर ही नहीं निकले, उनके आश्रम भी छिन गये। आशारामजी बापू की आवश्यकता है, आपको है, पूरी दुनिया को है और आशारामजी बापू बाहर आयेंगे, इसको दुनिया की कोई शक्ति रोक नहीं सकती। बापूजी बहुत महान तपस्वी हैं, वे तपस्या कर रहे हैं, उनकी ऊर्जा आपको भी मिलेगी।

श्री आनंद जकोटियाजी, सनातन संस्था : इसके पहले बापूजी पर वशीकरण के आरोप हुए, तंत्र-मंत्र के हुए - क्या-क्या आरोप लगाये गये पर उन सब आरोपों से वे न्यायालय में निर्दोष साबित हुए इसीलिए धर्मद्रोहियों ने अभी उन पर यौन-शोषण और रेप का आरोप लगा दिया है। लड़की के बयान एवं लैबोरेटरी रिपोर्ट के अनुसार यौन-शोषण नहीं हुआ, खरोंच तक नहीं आयी फिर भी झूठी धाराएँ, पॉक्सो एक्ट लगाकर फँसा दिया है। बापूजी ने युवाओं के मन में हिन्दू संस्कृति के प्रति जागृति की है, समाज के लिए कार्य किये हैं लेकिन कुछ हिन्दू समाज इसके बारे में नहीं सोचता है बल्कि षड्यंत्रकारियों की बातों को फैलाते हैं। यह समाज की जो दुर्दशा है उसे हमें बदलना होगा।

साधकों ने बापूजी से जो अनुभव पाये हैं उन्हें वे समाज में बाँटें। समाज को बतायें कि बापूजी ने क्या कार्य किया है और धर्मांतरणवाले और उनसे जुड़े नेता क्या कार्य कर रहे हैं ? हिन्दू जनजागृति समिति और सनातन संस्था सदैव बापूजी की सेवा और समर्थन में हैं।

आप पुरुषार्थ करके अपनी मति को ऐसा बनाइये कि आपको लगे कि भगवान पूर्णरूप से मेरे ही हैं। माँ के दस बेटे होते हैं, हर बेटे को माँ पूर्णरूप से अपनी लगती है, ऐसे ही भगवान हमको पूरे-के-पूरे अपने लगने चाहिए। ऐसा नहीं कि भगवान बापूजी के हैं, आपके नहीं हैं। जितने बापूजी के हैं उतने-के-उतने आपके हैं। 'ऋग्वेद' कहता है : मन्द्रा कृणुध्वं धिय आ तनुध्वम्। 'तुम अपनी बुद्धि को तीक्ष्ण बनाओ और कर्म करो।' (१०.१०१.२) और कर्म में ऐसी कुशलता लाओ कि कर्म तो हो लेकिन कर्म के फल की लोलुपता नहीं हो और कर्म में कर्तृत्व अभिमान भी नहीं हो। कर्म प्रारब्ध-प्रवाह से होता रहे और आप कर्म को कर्मयोग बनाकर नैष्कर्म्य सिद्धि प्राप्त करके भगवान में विश्राम पाओ, भगवान में प्रीति बढ़ाओ, ब्रह्मस्वभाव में जगो, ब्राह्मी स्थिति बनाओ।

महामंडलेश्वर स्वामी केशवात्मानंदजी महाराज, कंसेरा : पूज्य शंकराचार्यजी की तरह संत आशारामजी को भी जेल में डाल दिया गया। अगर उन पर कोई आरोप है तो जैसे आज सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश के बारे में न्यायाधीशों की एक समिति बना के आरोप की जाँच करायी जा रही है कि आरोप सच है या झूठा है, उस तरह पहले जाँच करायी जानी चाहिए थी परंतु ऐसा हुआ नहीं। अतः हम सबको अपने धर्म की रक्षा करने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ होना चाहिए।

सेनाचार्य पीठ के महंत स्वामी नरेशानंदजी, शुक्रताल : जो संत प्राणिमात्र को जीना सिखाते हैं, तरह-तरह के दुःख-संकट मिटाते हैं, उन्हें निगुरों व दुष्टों ने जेल भेज दिया। हमें डट के मुकाबला करना है। हमें बापूजी ने सत्संग में सुनाया था कि जुल्म करना तो पाप है पर जुल्म को देखना भी पाप है और जुल्म को सहना भी पाप है।

श्री हरीशजी, अधिवक्ता, अलीगढ़ : 'सच' नाम की पुस्तक ले के हमको विद्यालयों आदि विभिन्न स्थानों में जाना है। इसमें सब कुछ लिखा हुआ है। देखो, अब तक तो हमारी पढ़ाई हो रही थी जब हम सत्संग में जाते थे पर अब हमारी परीक्षा का समय है। तो हम क्या करेंगे ? प्रचार खूब करेंगे। अपने गुरु के लिए यह जरूर करेंगे। हमारे गुरुदेव निर्दोष हैं, निर्दोष हैं, निर्दोष हैं !

महंत देवदासजी महाराज, काशीपुर, हरियाणा : पूज्य बापूजी का समर्थन कर रहे ६-७ करोड़ साधकों को कोई सुनने को तैयार नहीं है कि वे क्या कह रहे हैं और एक लड़की की बात मानकर हमारी सनातन संस्कृति के शिरोमणि को जो यह सरकार पकड़ लेती है और जेल में डाल देती है, जमानत भी नहीं होने देती, यह कैसी विडम्बना है ! हमारी संस्कृति के साथ और इस देश में रह रहे हम हिन्दुओं के साथ इतना बड़ा कदम उठा सकते हैं तो वे हिन्दुस्तानी हैं कि बाहर के हैं इसमें भी संदेह है। इन षड्यंत्रकारियों के सामने हम सबको एकजुट होना पड़ेगा। हमें अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना पड़ेगा, कुछ हो सकता है और भक्त की शक्ति कभी कम नहीं होती। भक्त शराब, सिगरेट नहीं पीते, तम्बाकू नहीं खाते या और दूसरे व्यसन नहीं करते हैं तो उनकी आध्यात्मिक आभा, आध्यात्मिक शक्ति महान होती है, बड़ी होती है।

शीतकाल बलसंवर्धन का काल है। इस काल में सम्पूर्ण वर्ष के लिए शरीर में शक्ति का संचय किया जाता है। शक्ति के लिए केवल पौष्टिक, बलवर्धक पदार्थों का सेवन ही पर्याप्त नहीं है अपितु मालिश (अभ्यंग), आसन, व्यायाम भी आवश्यक हैं। शीतकाल में मालिश विशेष लाभकारी है। आयुर्वेद के श्रेष्ठ आचार्य श्री सुश्रुताचार्यजी कहते हैं :

प्राणाश्च स्नेहभूयिष्ठाः स्नेह साध्याश्च भवन्ति।

'मनुष्य का जीवन स्नेह पर आधारित है तथा उसकी रक्षा भी स्नेह द्वारा ही होती है।'

(सुश्रुत चिकित्सास्थान : ३१.३)

संस्कृत में स्नेह का अर्थ चिकनाई या तैल भी होता है। 'स्वास्थ्य संहिता' के अनुसार घी का सेवन करने से ८ गुनी ज्यादा शक्ति उतनी ही मात्रा में तैल-मर्दन अर्थात् मालिश से मिलती है।

तेल से नियमित की गयी मालिश सतत कार्यरत शरीर में दृढ़ता, आघात सहने की क्षमता व प्रतिक्षण होनेवाली शरीर की क्षति की पूर्ति करती है। स्नायुओं व अस्थियों को पुष्ट कर शरीर को मजबूत व सुडौल बनाती है। मालिश से त्वचा स्निग्ध, मुलायम व कांतियुक्त बनती है, त्वचा पर झुर्रियाँ जल्दी नहीं आतीं। ज्ञानेन्द्रियाँ व कर्मेन्द्रियाँ दीर्घकाल तक कार्यक्षम रहती हैं। वृद्धावस्था देर से आती है। मालिश एक श्रेष्ठ वायुशामक चिकित्सा भी है। पैर के तलुओं की मालिश करने से नेत्रज्योति बढ़ती है, मस्तिष्क शांत हो जाता है व नींद गहरी आती है। मालिश से शारीरिक व मानसिक श्रम से उत्पन्न थकान मिटती है। मन प्रसन्न व उत्साहित रहता है। नियमित मालिश से व्यक्तित्व आकर्षक बनता है।

उपयुक्त तेल : मालिश के लिए तिल का तेल सर्वश्रेष्ठ माना गया है। यह उष्ण व हलका होने से शरीर में शीघ्रता से फैलकर स्रोतसों की शुद्धि करता है। यह उत्तम वायुनाशक व बलवर्धक भी है। स्थान, ऋतु, प्रकृति के अनुसार सरसों, नारियल अथवा औषधसिद्ध तेलों (आश्रम में उपलब्ध आँवला तेल) का भी उपयोग किया जा सकता है। सिर के लिए ठंडे व अन्य अवयवों के लिए गुनगुने तेल का उपयोग करें।

मालिश काल : मालिश प्रातःकाल में करनी चाहिए। धूप की तीव्रता बढ़ने पर व भोजन के पश्चात् न करें।

प्रतिदिन पूरे शरीर की मालिश सम्भव न हो तो नियमित सिर व पैर की मालिश तथा कान, नाभि में तेल डालना चाहिए।

सावधानी : मालिश के बाद ठंडी हवा में न घूमें। १५-२० मिनट बाद सप्तधान्य उबटन या बेसन अथवा मुलतानी मिट्टी लगाकर गुनगुने पानी से स्नान करें। नवज्वर, अजीर्ण व कफप्रधान व्याधियों में मालिश न करें। स्थूल व्यक्तियों में अनुलोम गति से अर्थात् ऊपर से नीचे की ओर मालिश करें।

खजूर खाओ, सेहत बनाओ !

खजूर मधुर, शीतल, पौष्टिक व सेवन करने के बाद तुरंत शक्ति-स्फूर्ति देनेवाला है। यह रक्त, मांस व वीर्य की वृद्धि करता है। हृदय व मस्तिष्क को शक्ति देता है। वात, पित्त व कफ इन तीनों दोषों का शामक है। यह मल व मूत्र को साफ लाता है। खजूर में कार्बोहाइड्रेट्स, प्रोटीन्स, कैल्शियम, पोटैशियम, मैग्नेशियम, फॉस्फोरस, लौह आदि प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। 'अमेरिकन कैंसर सोसायटी' के अनुसार शरीर को एक दिन में २०-३५ ग्राम डाएटरी फाइबर (खाद्य पदार्थों में स्थित रेशा) की जरूरत होती है, जो खजूर खाने से पूरी हो जाती है।

खजूर रातभर पानी में भिगोकर सुबह लेना लाभदायक है। कमजोर हृदयवालों के लिए यह विशेष उपयोगी है। खजूर यकृत (लीवर) के रोगों में लाभकारी है। रक्ताल्पता में इसका नियमित सेवन लाभकारी है। नींबू के रस में खजूर की चटनी बनाकर खाने से भोजन की अरुचि मिटती है। खजूर का सेवन बालों को लम्बे, घने और मुलायम बनाता है।

औषधि-प्रयोग

मस्तिष्क व हृदय की कमजोरी : रात को खजूर भिगोकर सुबह दूध या घी केसाथ खाने से मस्तिष्क व हृदय की पेशियों को ताकत मिलती है। विशेषतः रक्त की कमी के कारण होनेवाली हृदय की धड़कन व एकाग्रता की कमी में यह प्रयोग लाभदायी है।

शुक्राल्पता : खजूर उत्तम वीर्यवर्धक है। गाय के घी अथवा बकरी के दूध के साथ लेने से शुक्राणुओं की वृद्धि होती है। इसकेअतिरिक्त अधिक मासिक स्राव, क्षयरोग, खाँसी, भ्रम (चक्कर), कमर व हाथ-पैरों का दर्द एवं सुन्नता तथा थायरॉइड संबंधी रोगों में भी यह लाभदायी है।

कब्जनाशक : खजूर में रेचक गुण भरपूर है। ८-१० खजूर २०० ग्राम पानी में भिगो दें, सुबह मसलकर इनका शरबत बना लें। फिर इसमें ३०० ग्राम पानी और डालकर गुनगुना करके खाली पेट चाय की तरह पियें। कुछ देर बाद दस्त होगा। इससे आँतों को बल और शरीर को स्फूर्ति भी मिलेगी। उम्र के अनुसार खजूर की मात्रा कम-ज्यादा करें।

नशा-निवारक : शराबी प्रायः नशे की झोंक में इतनी शराब पीते हैं कि उसका यकृत नष्ट होकर मृत्यु का कारण बन जाता है। इस स्थिति में ताजे पानी में खजूर को अच्छी तरह मसलते हुए शरबत बनायें। यह शरबत पीने से शराब का विषैला प्रभाव नष्ट होने लगता है।

आँतों की पुष्टि : खजूर आँतों के हानिकारक जीवाणुओं को नष्ट करता है, साथ ही खजूर के विशिष्ट तत्त्व ऐसे जीवाणुओं को जन्म देते हैं जो आँतों को विशेष शक्तिशाली तथा अधिक सक्रिय बनाते हैं।

हृदयरोगों में : लगभग ५० ग्राम गुठलीरहित छुहारे (खारक) २५० मि.ली. पानी में रात को भिगो दें। सुबह छुहारों को पीसकर पेस्ट बना के उसी बचे हुए पानी में घोल लें। इसे प्रातः खाली पेट पी जाने से कुछ ही माह में हृदय को पर्याप्त सबलता मिलती है। इसमें १ ग्राम इलायची चूर्ण मिलाना विशेष लाभदायी है।

तन-मन की पुष्टि : दूध में खजूर उबाल के बच्चों को देने से उन्हें शारीरिक-मानसिक पोषण मिलता है व शरीर सुदृढ़ बनता है।

शैयामूत्र : जो बच्चे रात्रि में बिस्तर गीला करते हों, उन्हें दो छुहारे रात्रि में भिगोकर सुबह दूध में उबाल के दें।

बच्चों के दस्त में : बच्चों के दाँत निकलते समय उन्हें बार-बार हरे दस्त होते हों या पेचिश पड़ती हो तो खजूर के साथ शहद को अच्छी तरह फेंटकर एक-एक चम्मच दिन में २-३ बार चटाने से लाभ होता है।

सावधानी : आजकल खजूर को वृक्ष से अलग करने के बाद रासायनिक पदार्थों के द्वारा सुखाया जाता है। ये रसायन शरीर के लिए हानिकारक होते हैं। अतः उपयोग करने से पहले खजूर को अच्छी तरह से धो लें। धोकर सुखाने के बाद इन्हें विभिन्न प्रकार से उपयोग किया जा सकता है।

मात्रा : ५ से ७ खजूर अच्छी तरह धोकर रात को भिगो के सुबह खायें। बच्चों के लिए २-४ खजूर पर्याप्त हैं। दूध या घी में मिलाकर खाना विशेष लाभदायी है। होली के बाद खजूर खाना हितकारी नहीं है।

बापूजी पर ऐसा इल्जाम लगाना वाहियात है
- सलीम गुल मोहम्मद, अहमदाबाद

पहले मैं मांसाहार, सिगरेट, तम्बाकू आदि बहुत सारे व्यसनों का शिकार था। एक दिन मैं एक सेठ के पास नौकरी करने के लिए गया। ज्यों ही उनके कमरे में प्रवेश किया तो एक फकीर की तस्वीर साहब का दीदार हुआ। उनकी आँखों से नूरानी नूर बरस रहा था। मैं देखकर ठगा-सा रह गया, मेरे सारे अवगुण उसी दिन से छूटने लगे। उस समय मेरे अब्बाजान खुदा को प्यारे हो चुके थे पर तस्वीर साहब में तो मेरे अब्बा हुजूर की छवि का दीदार हो रहा था। उन सेठ ने बताया कि ये हमारे गुरुदेव पूज्य संत श्री आशारामजी बापू हैं।

मुझे पक्का विश्वास हो गया कि ये कोई सच्चे पीर-फकीर हैं, सच्चे बादशाह हैं। मुझे उन सेठ के यहाँ सत्संग सुनने को मिला। बापूजी ने इश्क इलाही, इश्क नूरानी की बातें तथा इस्लामी सूफी फकीरों के वाकयात बताये, जिससे मेरे मन की सारी उलझनें सुलझने लगीं। मैं रोज सेठ के यहाँ सत्संग सुनने जाने लगा। मेरे घर में मांस आदि आये दिन बनता रहता था पर मुझ पर सत्संग का ऐसा प्रभाव पड़ा कि मांसाहार करते ही मुझे वमन होने लगा। मैंने सोचा कि बाबा के तस्वीर साहब का दीदार तथा सत्संग की कैसेट सुनने मात्र से ऐसा हो रहा है तो रू-बरू दीदार करूँगा तो क्या होगा !

और एक दिन मैं सत्संग सुनने आश्रम में पहुँच गया। वहाँ मुझे अनोखा सुकून मिला। मैं नित्य सत्संग में जाने लगा, सगे-संबंधियों के विरोध पर भी मैं अडिग रहा, मैंने बापूजी से मंत्रदीक्षा भी ले ली। इसके बाद मेरे सारे व्यसन और कुसंगति अपने-आप ही छूट गयी। ऐसे संत-फकीर को मेरे कोटि-कोटि प्रणाम हैं !

आज जो बापूजी को सुनियोजित साजिश करके फँसाया गया है, यह हमारे वतन के लिए बड़े दुःख की बात है क्योंकि बापूजी ऐसे फकीर हैं जिनके सम्पर्क में आनेवाले लाखों युवक-युवतियों का जीवन सँवरा है। बापू ने हम युवाओं को जीवन जीने की नयी दिशा दी है। हमारा जीवन खुदा को पाने के लिए है - बापू ने ऐसा इल्म कराया है। प्राणिमात्र में खुदा के दीदार का नजरिया दिया है। पतित-से-पतित व्यक्ति भी जिनके सम्पर्क में आने से उन्नत हो जाता है उन पर ऐसा इल्जाम लगाना वाहियात है, सरासर झूठ है।

वह समाजसेवा जो है दुर्गुणहारी, भाग्य-उद्धारिणी

पहले मैं इतना कामी था कि एक दिन भी पत्नी के बिना नहीं रह सकता था। अत्यधिक क्रोधी होने के कारण जरा-जरा बात में गुस्से की आग में जलता रहता था। चाय, पान, बीड़ी, तम्बाकू आदि व्यसनों में डूबा हुआ था, जिससे शरीर दुर्बल एवं कई रोगों से ग्रस्त था। मन दुःखी व उद्विग्न रहता था।

पूज्य बापूजी की कृपा से एक दिन जिस विद्यालय में मैं प्रधान अध्यापक हूँ वहाँ 'ऋषि प्रसाद' के सेवाधारी ने सभी कर्मचारियों को 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका का सदस्य बना दिया। 'ऋषि प्रसाद' पढ़ने से बापूजी के दर्शन की लालसा जगी। कुछ दिनों बाद पूज्य बापूजी से दीक्षा भी मिल गयी। मंत्रदीक्षा के प्रभाव से मेरे सारे दुर्गुण छूट गये। आज मेरा पूरा जीवन ही बदल गया है।

मैंने सोचा जिस पत्रिका ने मेरे सारे दुर्गुणों को दूर कर दिया, उसे क्यों न मैं दूसरों तक पहुँचाऊँ ! अतः मैंने 'ऋषि प्रसाद' की सेवा शुरू कर दी। साथ ही 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश ज्ञान प्रतियोगिता' की भी सेवा का सौभाग्य मुझे मिला। मेरे ऊपर करीब १.५ लाख का कर्जा था। 'ऋषि प्रसाद' की सेवा शुरू करने के एक साल के अंदर मुझे पता भी नहीं चला कि कब, कैसे मेरे ऊपर से कर्जा उतर गया। गुरुकृपा के इतने लाभ हुए कि वर्णन करने का मेरी वाणी में सामर्थ्य नहीं है।

परम कृपालु, भक्तवत्सल सद्गुरु भगवान के चरणों में अनंत प्रणाम !

– राजाराम चढ़ार , राहतगढ़, जि. सागर (म.प्र.), मो. : ९३२९६५८२७९

गीता जयंती पर आयोजित हुए विभिन्न कार्यक्रम

गीता का ज्ञान अद्भुत है। पूज्य बापूजी कहते हैं : ''श्रीमद् भगवद्गीता के ज्ञानामृत के पान से मनुष्य के जीवन में साहस, समता, सरलता, स्नेह, शांति और धर्म आदि दैवी गुण सहज ही विकसित हो उठते हैं।''

स्वामी विवेकानंदजी कहते थे : ''गीता का ज्ञान प्रत्येक मानव तक पहुँचाना चाहिए।'' और यह महान राष्ट्र-उन्नतिकारक कार्य वर्तमान युग में ब्रह्मनिष्ठ संत पूज्य बापूजी द्वारा वैश्विक स्तर पर पिछले ५० वर्षों से किया जा रहा है।

जिस प्रकार अर्जुन ने महाभारत के युद्ध के भीषण वातावरण में भी श्रीकृष्ण द्वारा गीता-ज्ञान पाकर आनंद, शांति व समता का साम्राज्य पाया था, ठीक उसी प्रकार आज अशांति, भ्रष्टाचार, आरोप-प्रत्यारोप, झूठ, कपट, धोखा जैसी समस्यारूपी युद्धों से ग्रस्त वातावरण में करोड़ों लोगों ने पूज्य बापूजी द्वारा गीता ज्ञानामृत पाकर भय, तनाव व चिंता से मुक्त हो सुखी, स्वस्थ व सम्मानित जीवन जीने की कला सीखी है।

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी पूज्यश्री की पावन प्रेरणा से साधकों ने 'गीता जयंती' का पावन पर्व बड़े पैमाने पर मनाया। देशभर में 'बाल संस्कार केन्द्रों', 'युवा सेवा संघों' तथा 'महिला उत्थान मंडलों' द्वारा 'श्रीमद् भगवद्गीता' का पाठ व पूजन किया गया। जालंधर में गीता जयंती पर सामूहिक रूप से १८ अध्यायों का पाठ किया गया। अहमदाबाद आश्रम में भी इस दिन गीता के श्लोकों का पाठ किया गया। गीता जयंती पर दिल्ली, उल्हासनगर (महा.), चंडीगढ़ सहित देश के कई स्थानों पर विशाल शोभायात्राएँ भी निकाली गयीं। छिंदवाड़ा (म.प्र.) में साध्वी कृष्णा बहन के सान्निध्य में गीता जयंती पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

षड्यंत्रकारियों के रंग में हो रहा भंग, साधकों की सुप्रचार सेवा ला रही रंग

मीडिया द्वारा पूज्य बापूजी, श्री नारायण साँईं और आश्रम को बदनाम करने के लिए बनायी गयी झूठी कहानियों की पोल खुलने से समाज में जागृति आने लगी है। समाज का बुद्धिजीवी वर्ग आज इस हकीकत को समझने लगा है कि बापूजी को षड्यंत्र के तहत फँसाया गया है। पूज्य बापूजी पर हो रहे अन्याय के विरोध में जंतर-मंतर पर पिछले ४ महीने १२ दिन से निरंतर धरना चल रहा है। यहाँ पर २९ व ३० नवम्बर को हजारों लोगों ने अनशन भी किया।

पूज्य बापूजी और श्री नारायण साँईंजी शीघ्र बाहर आयें व षड्यंत्रकारियों की साजिश विफल हो इस हेतु दीनानगर, सुजानपुर, फिरोजपुर, कपूरथला, पठानकोट, राजपुरा, भटिंडा, जालंधर, पटियाला, लुधियाना (पंजाब), धुलिया, मालेगाँव (महा.) तथा रायपुर (छ.ग.) सहित देश के कई स्थानों पर ७-७ दिनों का सामूहिक अनुष्ठान हुआ। इसके अलावा देशभर में हजारों साधकों ने अपने-अपने घरों में भी इस प्रकार अनुष्ठान किया व कर रहे हैं।

भुसावल, पाचौरा, जामनेर, अकोला, अमलनेर, जलगाँव, अहमदाबाद, ग्वालियर, रायपुर आदि स्थानों पर सामूहिक हवन, जप, श्री आशारामायण पाठ आदि का आयोजन हुआ। रायपुर में सुप्रचार यात्रा का आयोजन हुआ। मुंबई, दिल्ली आदि स्थानों पर नुक्कड़ नाटिकाओं द्वारा षड्यंत्र की पोल खोलते हुए लोगों तक सच्चाई पहुँचाई गयी। कुप्रचार का खुलासा करनेवाले पर्चे अखबार, सीडी, 'सच्चाई' पुस्तक, 'सच' पुस्तक (भाग १ व २), 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका तथा मासिक समाचार पत्र 'लोक कल्याण सेतु' के माध्यम से समाज तक सच्चाई पहुँचाने की सेवा निरंतर जारी है। भारत माता के सपूत - सेवा करनेवाले सचमुच अपनी सात पीढ़ियाँ तार रहे हैं। धन्या माता पिता धन्यो...

मीडिया के दोगलेपन की वजह से जो सच देशवासियों तक नहीं पहुँच रहा था वह फेसबुक, ट्विटर आदि सोशल मीडिया द्वारा लोगों तक तुरंत पहुँच रहा है। बापूजी को षड्यंत्र के तहत फँसाये जाने के विरोध में अनेक हिन्दू संगठन भी संत-सम्मेलन, गोष्ठी, सेमीनारों के माध्यम से समाज में जागरूकता लाने की राष्ट्रसेवा बहुत उत्साहपूर्ण ढंग से कर रहे हैं। पंजाब में कपूरथला, जालंधर तथा होशियारपुर में 'हिन्दू यूनाइटेड फ्रंट' द्वारा 'संतों के खिलाफ षड्यंत्र' विषय पर सेमीनार का आयोजन किया गया

आसाराम के शिष्यों ने किया सेवा कार्य

कोलकाता. संत श्री आसाराम बापू के शिष्यों द्वारा नौ से 16 जनवरी तक गंगासागर तीर्थयात्रियों की सेवा की गयी. इस दौरान अनेकों कार्यक्रमों के साथ साधक तीर्थयात्रियों की सेवा में जुटे रहे. 12 जनवरी को गुरुदेव को 56 भोग का प्रसाद अर्पण किया गया. साधकों ने श्री आसारामायण शांति पाठ, सुंदर कांड, हनुमान चालीसा का पाठ किय प्रतिदिन भोजन और भंडारे का आयोजन किया गया. 1 जनवरी को खीर-पूड़ी के प्रसाद के साथ समापन हुअ समिति द्वारा पिछले 17 वर्षों से यात्रियों को निःशुल्क चाय, नाश्ता, भोज आवास की सुविधा देने के साथ ही जरूरतमंदों में कंबल वितरण किया जात

'धर्म रक्षा मंच' द्वारा १५ दिसम्बर को अहमदाबाद में तथा २२ दिसम्बर को हाथरस (उ.प्र) में विशाल धर्म रक्षा संत सम्मेलनों का आयोजन किया गया। संत सम्मेलनों में उपस्थित साधु-संतों एवं विभिन्न संगठनों के प्रमुखों ने पूज्य बापूजी व नारायण साँईंजी की रिहाई की तीव्र माँग करते हुए साधु-संतों के मान-सम्मान की रक्षा हेतु विशेष कानून-व्यवस्था बनाने की माँग की। २२ दिसम्बर को ही जालंधर (पंजाब) में साध्वी तरुणा बहन के सान्निध्य में विशाल साधक सम्मेलन का आयोजन हुआ, जहाँ अपने सद्गुरु के मधुर सुमिरन में हजारों भक्तों के हृदय द्रवीभूत हो गये एवं उन्होंने तन-मन-धन से और अधिक सुप्रचार करने का बीड़ा उठाया। २९ दिसम्बर को सूरत में विशाल संत-सम्मेलन का आयोजन हुआ। इस कड़ाके की ठंड में भी पूज्य बापूजी के साधक प्रभातफेरियों के द्वारा भगवन्नाम कीर्तन करते हुए अपने-अपने गली-मोहल्लों के वातावरण को पावन कर रहे हैं। दिल्ली, लखनऊ, इंदौर, चंडीगढ़, अमरावती आदि देश के विभिन्न शहरों व गाँवों में इस प्रकार की प्रभातफेरियाँ सतत चालू हैं।

श्री योग वेदांत सेवा समिति, बीड़ (महा.) ने 'साधक जोड़ो अभियान' के तहत साधकों की गोष्ठी कर उन्हें षड्यंत्र की सच्चाई बतायी तथा 'सच्चाई' पुस्तक, 'ऋषि प्रसाद' मासिक पत्रिका व अखबार आदि सुप्रचार सामग्री का वितरण भी किया। स्थानीय सांसद आदि प्रमुख व्यक्तियों को मिलकर षड्यंत्र की पोल खोलनेवाली 'सच' पुस्तक, 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका तथा अखबार आदि सुप्रचार सामग्री दी।

रूठों को मनाने की युक्ति - पूज्य बापूजी

जो क्रोध करे उस पर क्रोध न करो, एक बात। दूसरी बात, जो अपने से नहीं बोलते मानो जेठानी नहीं बोलती, देवरानी नहीं बोलती, पड़ोसी नहीं बोलते, रूठे हुए हैं तो आप अपनी तरफ से बोलो। भले वे खदेड़ दें, लताड़ दें। उस समय आप भावना करो, 'उनका लताड़ना, खदेड़ना कितनी देर रहेगा! यह तो उनका ऊपर-ऊपर से है, गहराई में तो उनके भीतर तू (भगवान) ही है।' तीसरी बात, किसी बात पर वाद-विवाद होने लग जाय तो आप जीभ तालू में लगाकर चुप्पी साधो। वाद-विवाद में बुद्धि, मन, जीवन क्यों खराब करो! 'वाद-विवाद से आपकी चेतना का मैं दुरुपयोग क्यों करूँ ? मैं तो आपकी गोद में आ गया।' - ऐसा सोचो। वाद-विवाद में होनेवाला शक्ति का ह्रास बच जायेगा। और चौथा, किसीका भी अपमान या तिरस्कार न करें। ऐसा करने से आपकी साधना सफल हो जायेगी, आप विजयी हो जाओगे।

भारतीय संस्कृति पर हो रहे अत्याचार के विरुद्ध विभिन्न स्थानों पर हो रहे हैं संत-सम्मेलन

हाथरस (उ.प्र.)
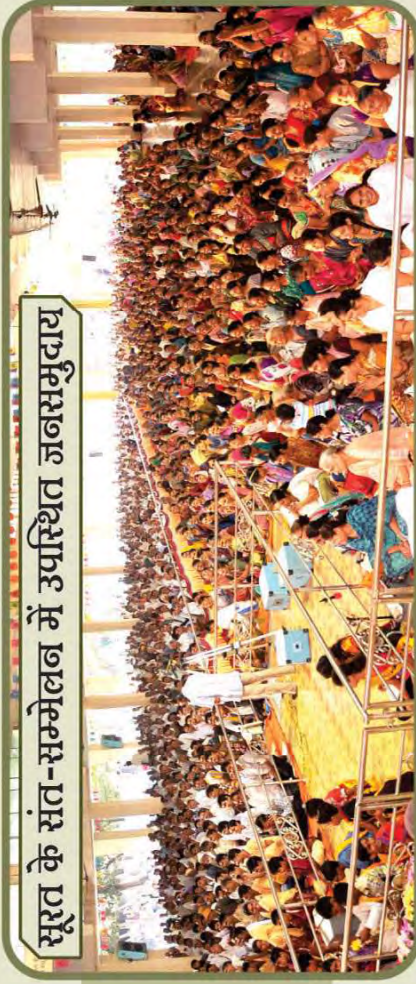
सूरत के संत-सम्मेलन में उपस्थित जनसमुदाय

पूज्य बापूजी
एवं
श्री नारायण साँईं
की रिहाई
हेतु हुआ
१०८ त्रिकुंडी महायज्ञ

अहमदाबाद आश्रम

पूर्णिमा पर जोधपुर पहुँचे भक्तों ने की हरिनाम सहित कारागृह की परिक्रमा

निर्दोष पूज्य बापूजी की शीघ्र रिहाई के लिए देश के विभिन्न स्थानों पर हो रहे सैकड़ों महायज्ञों की थोड़ी झलक

बैंगलोर

राऊरकेला (ओड़िशा)

टोरंटो (कनाडा)

लुधियाना

चिरमिरी (छ.ग.)

अहमदाबाद, सूरत एवं हाथरस (उ.प्र.) में हुए विशाल संत-सम्मेलनों में संतों एवं प्रतिष्ठितों ने पूज्य बापूजी एवं श्री नारायण साँईं के खिलाफ हो रही साजिश का जमकर विरोध किया

RNP. No. GAMC 1132/2012-14
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2014)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/12-14
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2014)
RNI No. 48873/91
DL (C)-01/1130/2012-14
WPP LIC No. U (C)-232/2012-14
MH/MR-NW-57/2012-14
'D' No. MR/TECH/47.4/2014

शंकराचार्यजी की गिरफ्तारी हो या आशारामजी बापू की, नारायण साँईं की या और संतों की, यह एक षड्यंत्र है। मैं आह्वान करता हूँ कि सभी संत-महंत और हिन्दू संस्थाएँ एकजुट होकर एक ऐसा आंदोलन छेड़ें जो पूरे देश को हिला के रख दे। **- जगद्गुरु श्री पंचानंद गिरिजी, जूना अखाड़ा**

स्वामी विवेकानंदजी के बाद सौ वर्ष के बाद विश्व में अपने हिन्दू धर्म, सनातन धर्म की तरफ से किसीने राष्ट्र का प्रतिनिधित्व किया, धर्मसंसद को सम्बोधित किया तो आशारामजी बापू ने ! बापू तो संतशिरोमणि हैं। ऐसे संतों का आशीर्वाद है भारत पर जिसकी वजह से हमारी संस्कृति और धर्म को कोई मिटा नहीं सकता, कोई दबा नहीं सकता।

- स्वामी चक्रपाणिजी महाराज, राष्ट्रीय अध्यक्ष, संत महासभा

सनातन हिन्दू धर्म के जिन संतों को षड्यंत्रों में फँसाया गया, उन्हें उबारने के लिए आशारामजी बापू हमेशा बड़े उबारक के रूप में सामने आये हैं। बापू सनातन हिन्दू धर्म के सुदृढ़ और सबल प्रहरी हैं। **- स्वामी केशवानंदजी महाराज, द्वारका**

साधु-संत हमारे जीवन की धरोहर हैं और हम सबको मिलकर प्रयास करना है कि इस धरोहर को कभी कोई आँच न आये। तो मेरा सभीसे आग्रह है कि आप लोग अपना अमूल्य योगदान इस धरोहर के संरक्षण में दें। **- श्री सुरेन्द्र पाल, 'महाभारत' धारावाहिक में द्रोणाचार्य और 'महादेव' धारावाहिक में दक्ष प्रजापति का किरदार अदा करनेवाले**

१२ साल के बाद एफआईआर दर्ज होती है और पुलिस हँसते-हँसते दर्ज कर लेती है। पूज्य बापूजी पर लगे सारे आरोप गलत हैं और गलत आरोप कानून की प्रक्रिया के द्वारा ही साबित होंगे कि ये गलत हैं और वह दिन दूर नहीं जब बापूजी देदीप्यमान सूर्य की तरह हमारे बीच आयेंगे।

- श्री बी. एम. गुप्ता वरिष्ठ अधिवक्ता

मुझे तो फक्र है कि मैं ऐसे हिन्दुस्तान में रहता हूँ जहाँ हमारे आशारामजी बापू हैं। बापूजी एक सच्चे संत हैं। बापूजी के करीब ६ करोड़ जो भक्त हैं, मायना रखते हैं। कोई नहीं जुड़ता है जब तक कि आदमी के अंदर सच्चाई न हो।

- इकरार खान, प्रमुख, ऑल इंडिया मुस्लिम इत्तिहात कमेटी

बापूजी के साथ ऐसा क्यों हो रहा है ? क्योंकि बापूजी धर्म के लिए, सनातन संस्कृति के लिए, सभ्यता के लिए और धर्मांतरण रोकने के लिए मुख्य रूप से कार्य कर रहे थे। मिशनरियों ने देखा कि ये संत तो हमारा धंधा चौपट करने में लगे हुए हैं तो क्यों न पहले इन पर ऐसे आरोप लगाये जायें कि इनका जो धर्म का स्तम्भ है वह टूट जाय। **- साध्वी सरस्वतीजी, भागवताचार्य**

सबसे बड़ा जो हमारे पास बल है, वह संत-समाज का बल है। जो संतों का निरादर कर रहा है, उसे दंड दीजिये।

मुझे मीडिया से भी बहुत एतराज है। अमेरिका में राजनायिका के साथ में जो व्यवहार हुआ, उस व्यवहार पर पूरा देश खड़ा हो गया। ये संत लोग हमारी संस्कृति के राजनायक हैं, इनके प्रति आप इस प्रकार का बर्ताव क्यों नहीं करते ? **- श्री मुकेश खन्ना, 'महाभारत' धारावाहिक में भीष्म पितामह तथा 'शक्तिमान' धारावाहिक में शक्तिमान का किरदार अदा करनेवाले**

इतना बड़ा षड्यंत्र हमारे भारत में हो रहा है। यद्यपि हमारे में कोई भिन्नता होगी लेकिन राष्ट्र की, धर्म की रक्षा के लिए हम सब एक हैं। **- श्री उद्धव महाराज, वारकरी सम्प्रदाय, महाराष्ट्र**

Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month. * Posting at ND PSO on 18th & 19th of E.M. * Posting at MBI Patrika Channel on 24th & 25th of E.M.